चकमक

अगस्त, 1995

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

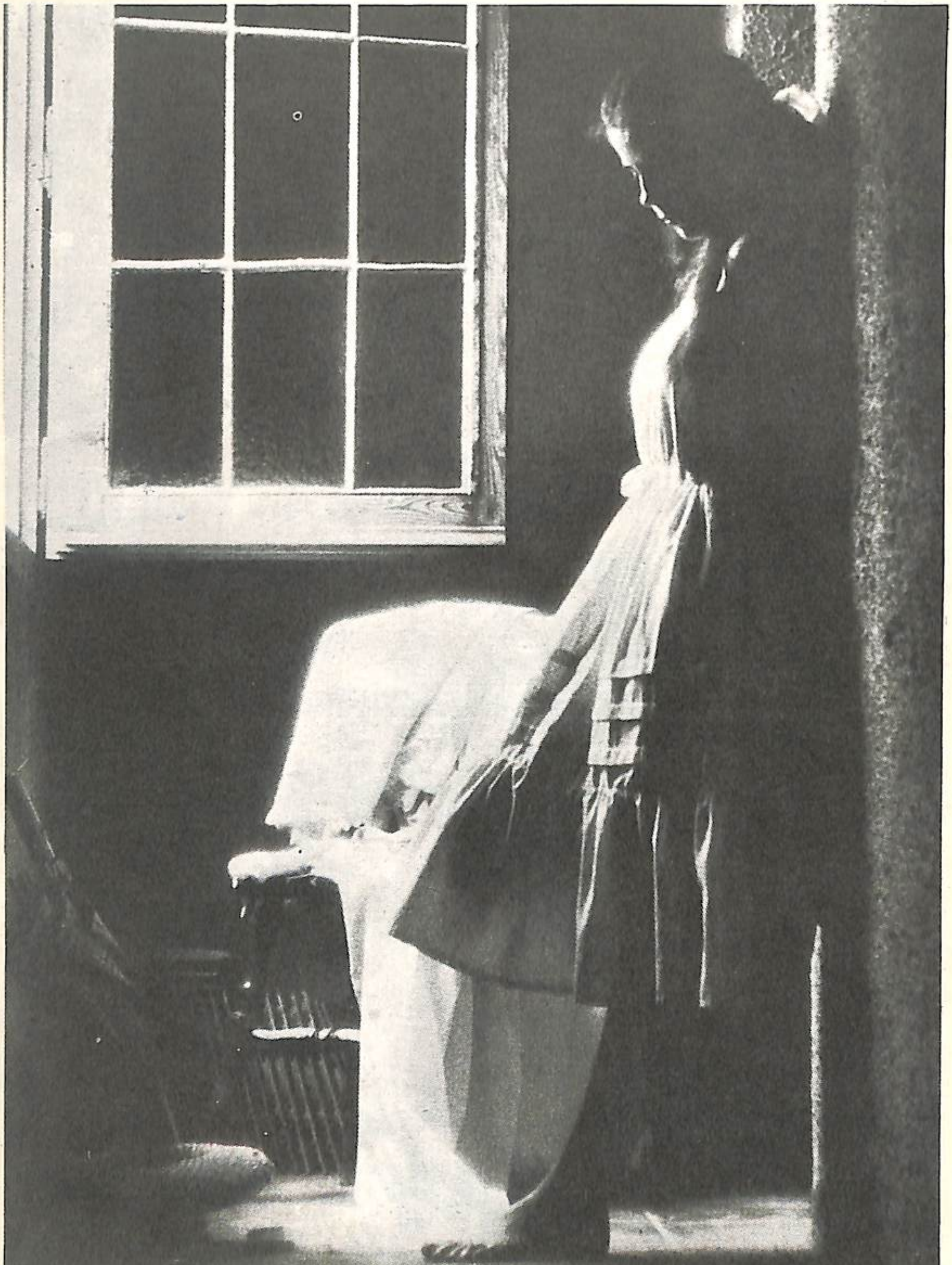

आँखन देखी

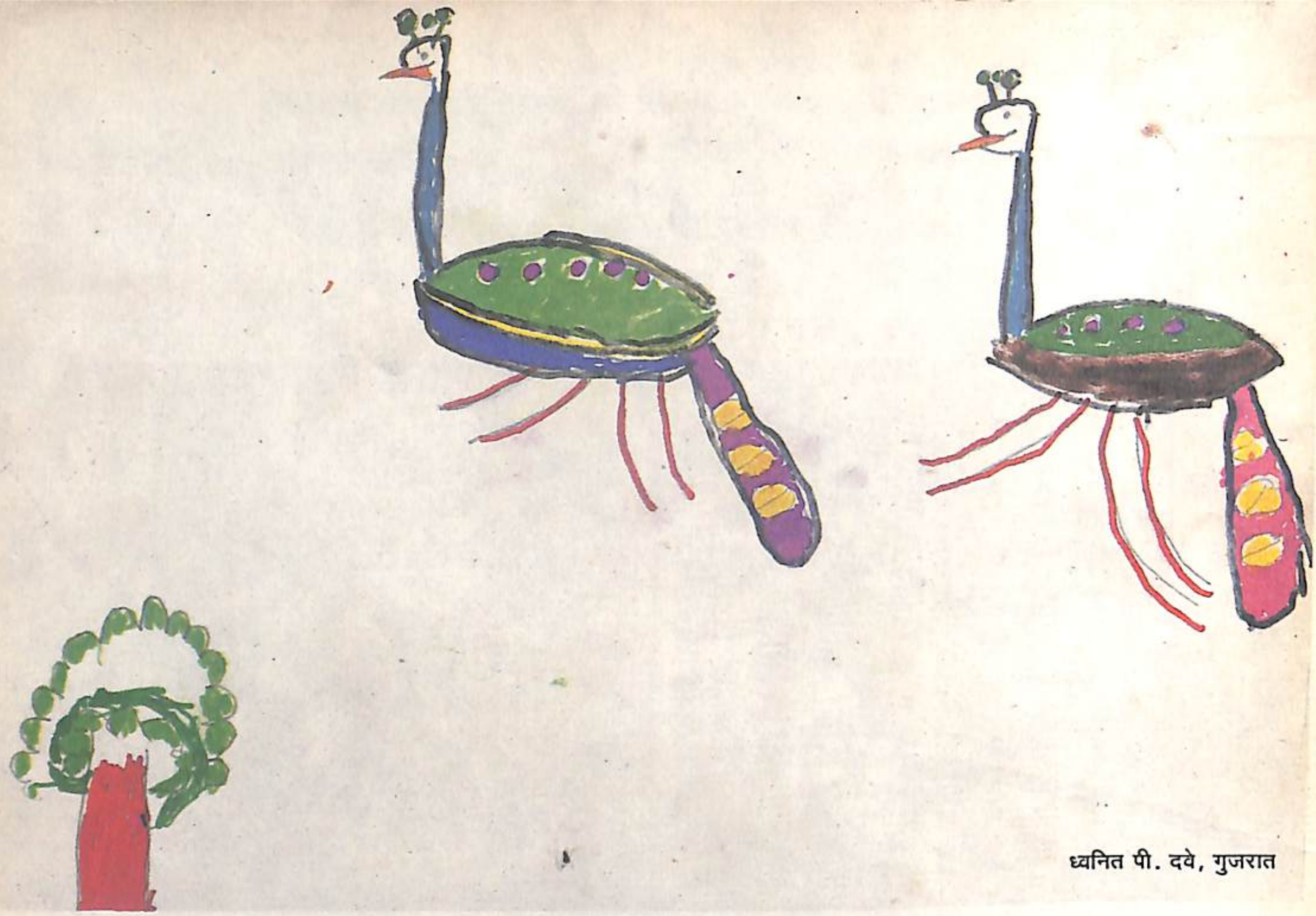

ध्वनित पी. दवे, गुजरात

कैलाशचन्द्र शर्मा, दस वर्ष, चाईया, श्रीगंगानगर, राजस्थान

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-11 अंक 2 अगस्त, 1995
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : *563380*

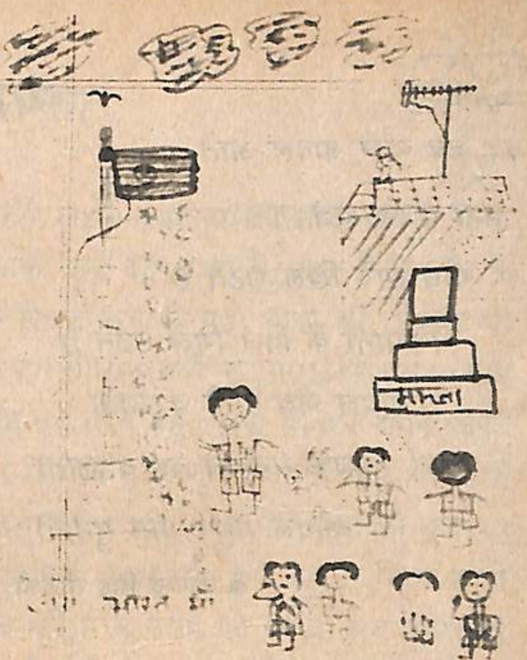

ममता कुशवाह, पाँचवीं, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

120 वें अंक में....

विशेष

8 ❑ आँखन देखी : ज़लाता की डायरी

कहानियाँ

25 ❑ मुन्नू की स्वतंत्रता
27 ❑ अकड़ घोंघों जी

कविताएँ

22 ❑ बच्चे
32 ❑ मेरी मुनिया रानी

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना
26 ❑ हमारे वृक्ष - 40 : बोतल ब्रश
34 ❑ माथापच्ची

और यह भी

20 ❑ पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे
23 ❑ कैसे होता है तारों का जन्म
24 ❑ खेल काग़ज़ का : मुर्गा
36 ❑ मज़ेदार खेल : ऊनी छल्ला
37 ❑ शुतुरमुर्ग

आवरण छायाचित्र : फोटोग्राफी ईयरबुक 1983 (फाउंटैन प्रेस) से साभार। छायाकार : कोरी पेड्रोला।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसि.. रना है।

प्यारे बादल आए

जब जब प्यारे बादल आते
वर्षा करके चले जाते
पौधे सारे खिल उठते हैं
किसानों के दिल मिल उठते हैं
बादल जब पानी बरसाता
सबके मन को वह बहलाता
कोयल मधुर गीत सुनाती
सबके मन को वो लुभाती
मोर नाच उठता है वन में
चंचल शोर मचाता है वन में
नदी झरने भर जाते हैं
मेंढक मिलकर गाते हैं
जब-जब प्यारे बादल आते
वर्षा करके चले जाते

● **लोकेन्द्र सिंह सोलंकी, पन्द्रह वर्ष, भादूगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.**

सुनील गुप्ता, चौथी, सिरसी, धार, म.प्र.

वर्षा

एक बार मैं जंगल में से जा रहा था तो रास्ते में वर्षा होने लगी। मेरे पास छाता नहीं था। मैं भीग गया और मुझे ठण्ड लगने लगी। मैं ठण्ड से काँपने लगा। थोड़ी देर बाद वर्षा बन्द हो गई। फिर मैं शाम को घर आया और मुझे रात में बुख़ार आ गया। मैं चार-पाँच रोज़ तक स्कूल नहीं गया। मेरी एबसेन्ट लग गई। फिर मेरा बुख़ार ठीक हो गया। और जब मैं स्कूल गया तो सर ने मुझे डाँटा और कहा कि तुम परीक्षा में नहीं बैठ सकते और मुझे स्कूल से भगा दिया।

पापा मुझे अपने साथ लेकर स्कूल गए। पापा ने सर से बात की और उन्होंने मुझे कक्षा में बैठा लिया। मैं रोज़ स्कूल जाने लगा। परीक्षा में अच्छे नम्बर से पास हुआ। मैं और मेरे मम्मी-पापा बहुत खुश हुए।

● सुनील कुमार, आठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.

मेरा पन्ना

बुआ की शादी रुकी

अनीता कसारे, चौथी, मुलताई, बैतूल, म. प्र.

हमारे समाज में छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की शादी कर दी जाती है। मेरी बुआ की, जिसकी उम्र दस बरस है, पास ही के गाँव के लड़के के संग शादी निश्चित कर दी गई। शादी की तारीख़ भी निश्चित हो गई। घर के सब लोग काम में जुट गए। निश्चित तारीख़ पर बारात आई। घर के सब लोग बहुत ख़ुश थे। सब अपने-अपने काम में लगे थे। मण्डप में मेरी बुआ दुल्हिन बनी बैठी थी। उसी समय दो पुलिस वाले हमारे घर आए और मेरे बाबा को बुलाकर डाँटने लगे। ख़ुशी ख़ामोशी में बदल गई। जब बारात बिना शादी किए वापस हो गई तब पुलिस ने बाबा को छोड़ा। अब बुआ की शादी आठ साल बाद होना निश्चित हुआ है।

● मधु पटेल, तीसरी, आमडीह, शहडोल, म.प्र.

घड़ी

पाई मैंने एक घड़ी
थी उसकी सुईयाँ खड़ी
वाह रे क्या क़िस्मत लड़ी
अगले दिन गया स्कूल
पूछे प्रश्न मास्टर जी ने
गया था सारे उत्तर भूल
हुए लाल पीले मास्टर जी
तभी याद आ गए उत्तर ए बी सी
मास्टर जी ने शाबाशी दी
देखी उन्होंने मेरी घड़ी
तभी छूटी उनके हाथों से छड़ी
हुआ शीशा चकनाचूर
जब मैं झुका उठाने को घड़ी
उसके बाद मास्टर जी
नज़र न आए दूर-दूर तक

● राज अभिषेक, ग्यारह वर्ष, डुमराँव, बिहार

अनुरुचि पाण्डे, चौथी, अल्मोड़ा, उ.प्र.

गौरी वापस आई

हितेश चौहान, चौथी, भोपाल, म.प्र.

मीनू और शालिनी अपनी प्यारी गाय गौरी को पास के जंगल से चराकर लौट रही थीं। वे दोनों सोमपुर गाँव में रहती थीं। उनके पिता किसान थे। गाँव के स्कूल में दोनों साथ-साथ ही पढ़ने जाती थीं। चलते-चलते अचानक वो चौंक उठीं। उनके सामने एक मोटा-तगड़ा, काला आदमी खड़ा था। उसके हाथ में एक लम्बा चाकू था। वह कड़ककर बोला, "लाओ, यह गाय मेरे हवाले कर दो।"

शालिनी समझ गई कि विरोध करने का कोई लाभ नहीं है। उस भयानक आदमी का नाम सुनकर दोनों घबराईं क्योंकि वह उस इलाक़े का ख़तरनाक चोर था मान्टो। वह गौरी को लेकर चलता बना। दोनों चुपचाप उससे कुछ दूरी बनाते हुए चलने लगीं। सोमपुर के पास वाले गाँव में एक पशु मेला लगा था। गौरी को बेचने के इरादे से मान्टो वहीं पहुँचा।

गौरी को लेकर वह एक जगह खड़ा हो गया। कुछ लोग आकर उससे मोल-भाव करने लगे। "तो यह बात है। ज़रा ग़ौर से मेरी बात सुनो।" मीनू ने शालिनी से कहा।

दोनों भागकर गौरी के पास पहुँचीं। शालिनी बोली, "गौरी तू कहाँ गई थी, हम कितनी देर से तुझे ढूँढ रहे थे।"

फिर वो गौरी को लेकर लौटने लगीं। यह देखकर मान्टो बोला, "ऐ लड़कियो, मेरी गाय को लेकर कहाँ चलीं? यह गाय मेरी है।"

मीनू ने कहा, "झूठ यह गाय हमारी है।"

मान्टो चिल्लाया। तब तक बहुत-से लोग आसपास जमा हो गए थे। "गाय आपकी है तो बताइए कि इस की कौन-सी आँख फूटी हुई है?" शालिनी ने गाय की दोनों आँखों पर हाथ रख दिया।

"बाईं।" मान्टो ने वैसे ही कह दिया।

शालिनी ने बाईं आँख से हाथ हटा दिया। वह आँख बिल्कुल ठीक थी। मान्टो ने कहा, "मेरा मतलब था मेरी तरफ से बाईं।"

"यह भी ग़लत।" शालिनी ने दूसरा हाथ भी हटाया। "गौरी की कोई आँख ख़राब नहीं है।" फिर उसने कहा, "यह कोई मामूली चोर नहीं मान्टो है।"

"ख़बरदार किसी ने मुझे पकड़ने की कोशिश की तो .....।" भीड़ को अपनी तरफ बढ़ते देख मान्टो ने चाकू निकाल लिया। तभी कुछ लोगों ने उसे पीछे से पकड़ लिया।

● ज़ाकेरा बी, सातवीं, धार, म.प्र.

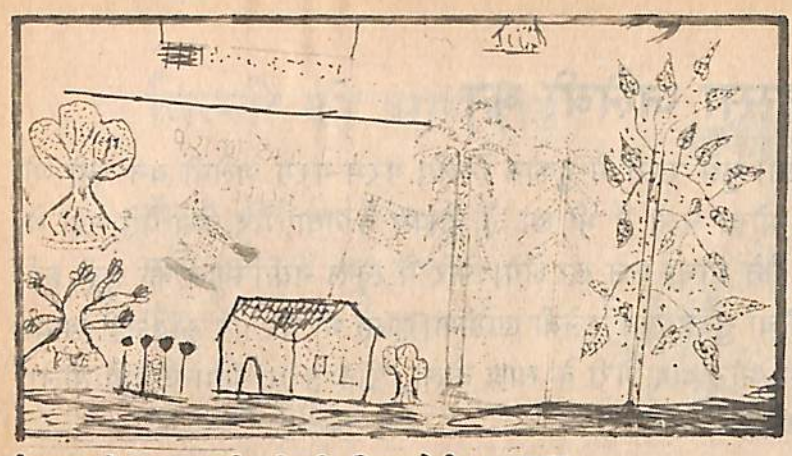

फेराग्या टेबरया वसावे, तीसरी, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

अनीता बौरासी, छटवीं, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

हिमांशु जोशी, डाक पत्थर, देहरादून, उ.प्र.

नारायणी देवांगन, छटवीं, भैसबोड

राजेश कुशवाह, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

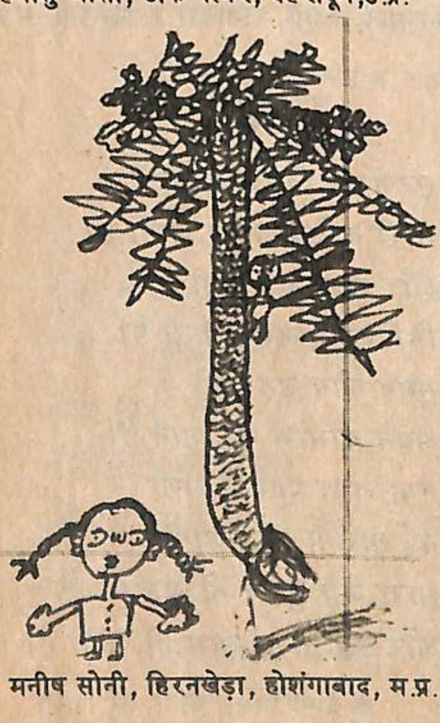

मनीष सोनी, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

बनसिंग लस्करया वसावे, तीसरी, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

मेरा पन्ना

किस्सा जलेबी का

एक दिन की बात है मैं स्कूल जा रहा था। मुझे रास्ते में दुकान मिली। गरम-गरम जलेबी बन रही थी। बहुत सारे लड़के जलेबी खा रहे थे। मैंने सोचा चलो मैं भी खा लूँ। दुकान में गया, मेरे पास पैसे नहीं थे। वहाँ लिखा था 'आज नगद कल उधार'। मैंने सोचा कल खा लेंगे। फिर मैं स्कूल गया। स्कूल की छुट्टी हुई, घर गया। रात को मैंने रोटी नहीं खाई, सोचा सुबह ख़ूब जलेबी खाऊँगा। सुबह भी घर पर कुछ नहीं खाया। फिर स्कूल गया। दुकान आई, अन्दर गया और दादागिरी के साथ बोला, "सेठ 500 ग्राम जलेबी तौल।"

सेठ ने जलेबी तौलकर दी। मैं जलेबी लेकर चल दिया। सेठ ने कहा, "पैसे।"

मैंने कहा, "अभी पैसे नहीं हैं, उधार।"

सेठ ने कहा, "वहाँ क्या लिखा है पढ़ ले। फिर आना।"

मैंने कहा, "मैंने तो कल ही पढ़ लिया था। अब तुम भी पढ़ लो।"

सेठ बोला, "आज फिर से पढ़ ले।

मैंने पढ़ा, "आज नगद कल उधार।"

अब मेरी समझ में आया। मैंने कहा "क्षमा माँगता हूँ सेठजी।" फिर वहाँ से चल दिया। घर आया और सोचा कि अब कभी जलेबी के चक्कर में भूखा नहीं रहूँगा।

● गोविन्द प्रसाद शर्मा, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

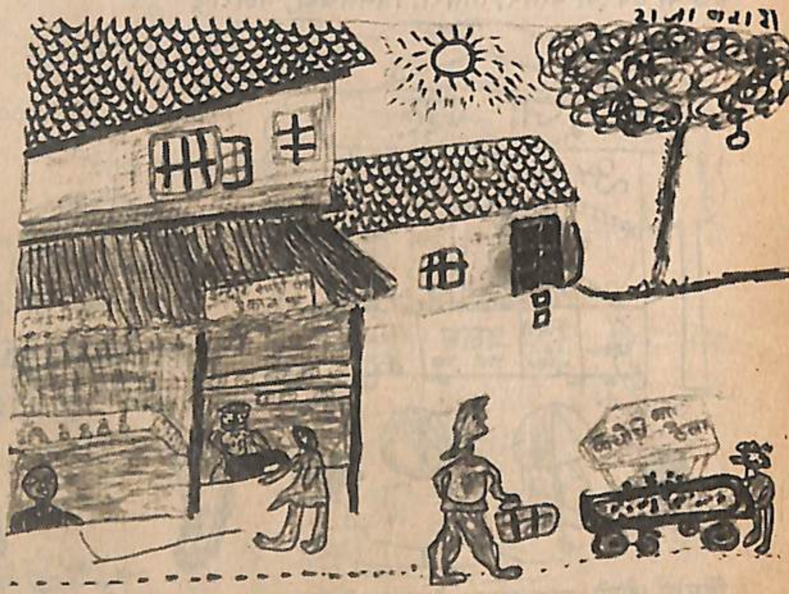

मनोज कुमार, छठवीं, राजाबरारी, टिमरनी, म.प्र.

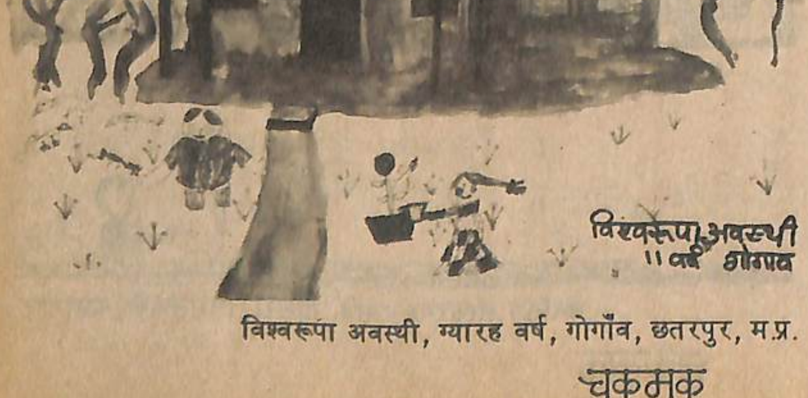

विश्वरूपा अवस्थी, ग्यारह वर्ष, गोगाँव, छतरपुर, म.प्र.

सुबह

सूरज की किरणें आती हैं
सारी कलियाँ खिल जाती हैं।
और सुबह हो जाती है
चिड़ियाँ मिलकर गाती हैं।
सुबह लोग उठ जाते हैं
अपने काम में जुट जाते हैं।
नया जोश पाते हैं प्राणी
नई ताज़गी नई कहानी।
सारा जग सुन्दर हो जाता
और इसी तरह शाम हो जाती है।

● संध्या मिश्रा, चौथी, नई दिल्ली

बिल्ली की भागदौड़

बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ
प्यारे बच्चो मैं क्या खाऊँ
देख चिड़िया को मैं ललचाऊँ
बच्चे बोले न खा तू
इस नन्हीं चिड़िया को
करो दूसरा कोई शिकार
हाथ न आएगी नन्हीं चिड़िया
बिल्ली न मानी कर बैठी मनमानी
चिड़िया डाल से नीचे उतरी
हँसकर बोली "आजा मौसी।"
ख़ाली पीली यूँ न अकड़ो
पकड़ सको तो मुझको पकड़ो
बिल्ली उसके पीछे दौड़ी
चिड़िया डाल पर भागी
देख नन्हीं चिड़िया की शैतानी
बिल्ली को हुई बहुत हैरानी
हाथ न उसके कुछ आ पाया
बिल्ली का मन बहुत पछताया।

● ज़ीनत मुश्ताक, भोपाल, म.प्र.

अरविन्द श्रीवास्तव, ऊँचिया, दतिया, म.प्र

नीबू

एक नीबू गोल गोल।
उसको लिया मैंने मोल।
तेज़ छुरी से काटा।
दालमोठ में डाला।
अच्छी लगी दाल मोठ।
प्यारी लगी दाल मोठ।

● शीतल सोलंकी, आठवीं,
उन्हैल, उज्जैन, म.प्र.

मेरा गाँव

मेरा गाँव बड़ा है प्यारा
सुन्दर फूलों से है न्यारा
वह तो जग में उजियारा
उसमें एक अजीब नाम है।
प्रेम भरी बातों का काम है
उस गाँव का नाम नन्दौरी
राप्ती के है पास नन्दौरी
राप्ती नदी बहती झर झर
जैसे हो सोने का जल

● परितोष, सातवीं, उतरौला, गोण्डा, उ.प्र.

आँखन देखी : ज़लाता की डायरी

यूरोप महाद्वीप का एक देश है - यूगोस्लाविया। किसी समय इसमें छह प्रान्त थे - सर्बिया, क्रोएशिया, मोंटेनीग्रो, मेसेडोनिया और बोस्निया हर्जेगोविना। लेकिन धीरे-धीरे इनमें से अधिकाँश प्रान्त अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्र बनते गए। बोस्निया हर्ज़ेगोविना भी इस समय एक स्वतंत्र राष्ट्र है।

बोस्निया में मुख्य रूप से सर्ब, क्रोएट और मुसलमान निवास करते हैं। यूगोस्लाविया से अलग होने के कुछ समय बाद से ही बोस्निया में गृहयुद्ध छिड़ा हुआ है। यह अभी भी जारी है। इस गृहयुद्ध में लाखों लोग या तो मारे गए हैं या फिर घायल हुए हैं। लाखों बेघर-बार हैं।

इसी बोस्निया का एक शहर है - सराइवो। कभी बहुत सुन्दर रहा होगा, अब तो खण्डहर जैसा है। इसी सराइवो में एक लड़की रहती थी - ज़लाता फ़िल्पोविच। ज़लाता ने वहाँ हुई तबाही अपनी आँखों से देखी है। उसने जो कुछ देखा और महसूस किया, वह अपनी डायरी में लिखा है। ज़लाता ने अपनी ग्यारहवीं सालगिरह से कुछ पहले यह डायरी लिखनी शुरू की थी। डायरी लिखने की प्रेरणा उसे सम्भवतः ऐन फ्रैंक से मिली। ऐन एक यहूदी लड़की थी। उसने द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका को न केवल अपनी आँखों से देखा था, बल्कि ज़ुल्मों को सहा भी था। और अन्ततः इसमें उसकी जान चली गई थी। ऐन ने अपने अनुभवों का जिक्र अपनी डायरी में किया था, जो उसकी मौत की बाद उसके पिता ने प्रकाशित करवाई थी।

ज़लाता की डायरी सबसे पहले 1993 में फ्रांस में छपी थी। ज़लाता और उसके माता-पिता अब फ्रांस में रहते हैं। ज़लाता की डायरी के कई अन्य भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुए।

हम इस अंक में जलाता की डायरी के कुछ पन्ने छाप रहे हैं। ये हमने जोधपुर, राजस्थान से प्रकाशित होने वाली एक लघु पत्रिका 'शेष' (सम्पादक - हसन जमाल) के आठवें अंक से साभार लिए हैं। शेष एक ऐसी पत्रिका है जिसकी लिपि तो देवनागरी है लेकिन भाषा उर्दू है।

शायद तुम जानते ही होगे कि अगस्त महीने की छठी तारीख़ दुनिया भर में 'हिरोशिमा दिवस' के रूप में मनाई जाती है। 1945 में इसी तारीख़ को जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला बम गिराया गया था। उससे जो विनाश हुआ उसके दुष्परिणाम पूरी मानव जाति आज तक भुगत रही है। बोस्निया और दुनिया के अन्य तमाम हिस्सों में आज जो कुछ हो रहा है, उसे आने वाली न जाने कितनी पीढ़ियों को भुगतना होगा। आख़िर क्यों? आख़िर कब तक चलता रहेगा यह? क्यों मानव ही मानव का दुश्मन बना हुआ है?

ज़लाता की 'आँखन देखी' डायरी ऐसे कई सवाल हमारे सामने उठाती है।

5 गुरुवार
मार्च 1992

ओह मेरे ख़ुदा! सराइवो में जंग के शोले भड़कने लगे हैं। इतवार एक मार्च को हथियारों से लैस शहरियों के एक टोले ने (टी.वी. पर यही बताया गया है) एक सर्ब बराती को मार डाला और शादी कराने वाले पादरी को ज़ख्मी कर दिया। सोमवार दो मार्च को सारे शहर में जगह-जगह मोर्चे और नाके बन गए। कोई एक हज़ार के लगभग। हमारे घर में रोटी तक न थी। आख़िर शाम छह बजे लोग तंग आकर घरों से निकल आए। जुलूस बड़े गिरजा से शुरू हुआ। संसद की इमारत के सामने से गुज़रा और सारे शहर में घूमा-फिरा। मार्शल टीटो बेरक्स के क़रीब बहुत से लोग गोलियों से घायल हुए। लोग तराने गाते और 'बोस्निया, बोस्निया! सराइवो, सराइवो!' के नारे लगाते थे। वे यह भी बुलंद आवाज़ में कहते थे - 'हम एक साथ रहेंगे! आओ हमारे साथ मिल जाओ'। सराइवो रेडियो के डायरेक्टर ने रेडियो पर कहा कि इतिहास का नया अध्याय शुरू होने को है।

तक़रीबन आठ बजे रात हमने एक ट्राम की घण्टी की आवाज़ सुनी। उस दिन की पहली ट्राम शहर से गुज़रकर आई थी। और ज़िन्दगी मामूल पर आ गई। लोग गलियों-बाज़ारों में निकल आए, इस उम्मीद के साथ कि ऐसा ख़ूनख़राबा फिर कभी सराइवो में नहीं होगा। हम भी अम्न के जुलूस में शामिल हुए। घर आकर हम चैन-सुकून की नींद सोए। दूसरे रोज़ सब कुछ पहले की तरह था। वही क्लास रूम, संगीत की क्लास। मगर शाम को यह ख़बर आई कि तीन हज़ार चेतनिक (सर्ब क़ौमपरस्त) पाले की तरफ से सराइवो पर धावा बोलने बढ़े आ रहे हैं और पहले बाशचार्शिया पर हमला करेंगे। मौसी मलीचा ने बताया कि उनके घर के आगे नए मोर्चे बना दिए गए हैं और वे लोग रात को अपने घर नहीं सोएँगे क्योंकि सख़्त ख़तरा है। मौसी मलीचा और उनके घरवाले चचा नज़ाद के घर सोए। बाद में टी.वी. पर बाक़ायदा चख-चख सुनी गई। रादोवान (सर्बों का नेता) और इलिया इज़्ज़त बेगोविच (बोस्निया का राष्ट्रपति) ने ख़बरनामे में फ़ोन किया और आपस में बहस में उलझ पड़े। फिर गोरान मेलिच (समाचार पढ़ने वाला) को गुस्सा आ गया और उसके समझाने-बुझाने पर वे दोनों किसी जनरल कोकामियाच से मिलने पर राज़ी हो गए। मेलिच ज़बरदस्त है। वाक़ई ग्रेट! शाबाश!

चार मार्च बुध के रोज़ मोर्चे और नाके हटा लिए गए। लड़के (राजनीति करने वालों का सम्बोधन) किसी आपसी समझौते पर रज़ामंद हो गए हैं। अच्छी बात!

उस दिन हमारी आर्ट की टीचर हमारी क्लास टीचर के लिए एक तस्वीर लेकर आईं जो

आठ मार्च वाले ''महिला दिवस'' पर क्लास रूम में टाँगी जाएगी। हमने यह तोहफ़ा अपनी क्लास टीचर को दिया तो उन्होंने हमें घर जाने को कहा। इसका मतलब यह हुआ कि अभी गड़बड़ है और ख़तरा नहीं टला। हम सब पर दहशत छा गई। लड़कियाँ रोने-चीख़ने लगीं और लड़के चुपचाप अपनी आँखें झपकने लगे। अब्बा भी उस दिन जल्द ही काम से लौट आए। लेकिन सब कुछ ठीकठाक रहा। ख़्वाहमख़्वाह का शोरशराबा!

24 मंगलवार मार्च 1992

सराइवो में अब कोई अशान्ति नहीं। मगर दूसरे शहरों में काफ़ी ख़ून-ख़राबा हो रहा है। बोसानिस्की, ब्रोद, मोदरिचा, हर तरफ़ से हौलनाक ख़बरें और तस्वीरें आ रही हैं। अब्बा-अम्मी ख़बरों के वक़्त मुझे टी.वी. देखने से मना करते हैं। मगर बच्चों से इन सब भयानक चीज़ों को कैसे छिपाया जा सकता है जो चारों तरफ़ हो रही हैं। लोग फिर सहमे-सहमे और उदास हैं। नीले हेलमेटों, बल्कि नीली बेरट टोपियों वाले सराइवो में आ गए हैं। हम अब ख़ुद को ज़्यादा सुरक्षित महसूस करने लगे हैं। ''लड़के'' मंज़र से पीछे हट गए हैं।

अब्बा मुझे संयुक्त राष्ट्र संघ अम्न फ़ौज कमाण्ड की इमारत में ले गए। उन्होंने कहा कि अब जब कि सराइवो में नीला झंडा लहरा रहा है, हम बेहतर हालात की उम्मीद कर सकते हैं।

30 सोमवार मार्च 1992

अरी मेरी डायरी, जानती भी हो, मैं क्या सोच रही हूँ? ऐन फ्रैंक अपनी डायरी को ''किटी'' कहा करती थी। मैं भी शायद तुम्हारा कोई अच्छा-सा नाम रख सकूँ, कोई भला-सा नाम.... क्या रखूँगी तुम्हारा नाम? स्फोलेतिना पिद्ज़ामिता, शफ़ीका, हिकमता, शिवाला, मेमी या कोई और?

मैं सोच रही हूँ, सोच रही हूँ।

ठीक है, मैंने फ़ैसला कर लिया है। मैं तुम्हें अब से बुलाया करूँगी- मेमी। हाँ तो प्यारी मेमी। अब तक़रीबन आधा साल हो चुका है। हम सब अपनी परीक्षा की तैयारी में मसरूफ़ हैं और दिन-रात पढ़ रहे हैं। कल शायद हमें स्कंदरिया हॉल में एक संगीत सभा में जाना है। मगर

हमारी टीचर कहती हैं कि हम वहाँ न जाएँ। क्योंकि वहाँ दस हज़ार लोग यानी दस हज़ार बच्चे होंगे और हो सकता है कि कोई हमको फिरौती के लिए उड़ा ले जाए। या हॉल में बम रख दे। अम्मी भी कहती हैं कि मैं हरगिज़-हरगिज़ न जाऊँ। इसलिए मैं नहीं जाऊँगी।

अरे मेमी, तुम जानती हो, भला यूगोस्लाविया के गीतों की प्रतियोगिता में कौन जीता - एक्सतरानीला। अगली बात तुम्हें बताने से डरती हूँ। ख़ाला मलीचा कहती हैं कि उन्होंने इतवार दो दिसम्बर को नाई की दुकान पर यह बात सुनी थी 'बोम, बोम, धूँ धूँ सराइवो' यानी वे लोग सराइवो पर गोलीबारी करने वाले हैं। बहुत-बहुत प्यार, मेरी मेंमी!

6 सोमवार अप्रैल 1992

कल संसद भवन के सामने खड़े लोगों ने वरबानिया के पुल से गुज़रने की कोशिश की तो उन पर किसी ने गोलियाँ चलाईं। किसने? क्यों कर? क्यों? डुब्रोविंक के मेडिकल कॉलेज की एक छात्रा मारी गई। उसका ख़ून पुल पर छलक आया। अपने आख़िरी वक़्त में उसने सिर्फ़ ये शब्द कहे 'क्या यह सराइवो है? हौलनाक-हौलनाक-हौलनाक।'

यहाँ कोई शख़्स, कोई चीज़ अब सामान्य नहीं है। बाशचार्शिया को तबाह कर दिया गया है। पाले से आने वाले शरीफ़ज़ादों ने हमारे बाशचार्शिया पर गोले फेंके। कल से लोग बोस्निया के संसद भवन के अन्दर बैठे हैं। कुछ लोग इमारत के सामने खड़े हैं। हम अपने टी.वी. सेट को सोने के कमरे में ले आए हैं। यह टी.वी. मेरा है। मैं इस पर चैनल नम्बर एक के प्रोग्राम देखती हूँ और एम टी.वी. के गाने अब्बा-अम्मी के टी.वी. पर। अब वे हॉलीडे-इन की तरफ से गोलियाँ चला रहे हैं। संसद के सामने खड़े लोग हलाक और ज़ख्मी हो रहे हैं।

शायद हम तहख़ाने में चले जाएँ। हाँ मेमी, तुम मेरे साथ जाओगी। मैं बेआस, डरी हुई हूँ। संसद के सामने खड़े लोग भी बेआस, डरे हुए हैं। प्यारी मेमी, जंग आख़िर हम तक आ पहुँची। अम्न। अब अम्न आ जाना चाहिए।

सुना है, वे अब सराइवो के रेडियो और टी.वी. पर हमला करने वाले हैं। मगर अब तक उन्होंने किया नहीं। हमारे पड़ौस में गोलियाँ चलनी बन्द हो गई हैं। थपको ज़लाता थपको ज़लाता (मैं अच्छे नसीब के लिए लकड़ी को थपक रही हूँ।) ओह! मेरे ख़ुदा! गोली तो कहीं आसपास से गुज़री है। वे फिर गोलियाँ चला रहे हैं। ज़लाता।

9 गुरुवार
अप्रैल 1992

प्यारी मेमी, मैं स्कूल नहीं जा रही। सराइवो में सारे स्कूल और कॉलेज बन्द कर दिए गए हैं। सराइवो के ऊपर झुकी हुई पहाड़ियों में .ख़तरा दुबका बैठा है। मगर मेरा .ख़्याल है, हालात आहिस्ता-आहिस्ता पुरसुकून हो रहे हैं। वो यूँ कि पहले की तेज़, लगातार गोलीबारी अब रुक गई है। कभी-कभी तोपों की आवाज़ आती है। फिर वह ख़ामोश हो जाती है। अम्मी और अब्बा भी काम पर नहीं जा रहे हैं। वे खाने-पीने की चीज़ें ढेरों के हिसाब से .ख़रीद रहे हैं। वह इसलिए कि कोई नहीं जानता कल को क्या हो। ख़ुदा बचाए।

अब भी हर कोई स.ख़्त बेचैन है। एक तनाव की हालत में फँसा हुआ। अम्मी फ़ोन पर बड़ी देर तक बातें करती रहती हैं। वे दूसरे लोगों को फ़ोन करती हैं। उधर से उन लोगों के फ़ोन का ताँता बँधा रहता है। बेचारे फ़ोन को आराम नहीं मिलता। ज़लाता।

12 इतवार
अप्रैल 1992

प्यारी मेमी, शहर के नए इलाक़ों - दूबेरेनिया, मोइमेला, वोहिचकोपालिए पर संगीन गोलाबारी हो रही है। हर चीज़ तबाह की जा रही, जलाई जा रही है, लोग पनाहगाहों में रह रहे हैं। यहाँ शहर के बीच में, जहाँ हम रहते हैं, यह बात नहीं। सुकून है। लोग बाहर भी निकलते हैं। आज का दिन बहार के मौसम का एक गर्म, सुहाना दिन है। हम भी घर से बाहर गए। वासोमिश्किन स्ट्रीट में लोगों की रेलपेल थी। बच्चे भी बहुत थे। ऐसा लगा जैसे शान्ति का मार्च हो रहा हो। लोग इकट्ठे होने के लिए बाहर निकलते हैं। वे जंग नहीं चाहते। वे पहले की तरह जीना और ज़िंदगी से ख़ुशियाँ हासिल करना चाहते हैं। यह क़ुदरती बात है। है ना मेमी? जंग को जो दुनिया की सबसे बुरी चीज़ है, कौन पसन्द करेगा?

मैं आज इसी मार्च के बारे में सोचती रही जिसमें मैं भी शामिल थी। यह जंग से ज़्यादा बड़ी, ज़्यादा ताक़तवर है और इसलिए इसी की जीत होगी। जंग को मुँह की खानी पड़ेगी। लोगों की .फ़तेह होगी जंग की नहीं, क्योंकि जंग का इंसानियत से कोई वास्ता ही नहीं। जंग ग़ैर इंसानी है। सरासर वहशीपन! ज़लाता।

14 मंगलवार अप्रैल 1992

प्यारी मेमी, लोग सराइवो से भाग रहे हैं। हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन जाने वालों से खचाखच भरे हुए हैं। मैंने टी.वी. पर दोस्तों, हमसायों, अज़ीज़ों के एक दूसरे से जुदा होने की ग़मनाक तस्वीरें देखीं। कुन्बे और दोस्त, शायद हमेशा के लिए एक दूसरे से बिछड़ते हुए। एक ही ख़ानदान के कुछ लोग शहर से जा रहे हैं। कुछ यहीं रहेंगे। मुझे यह सब देखकर बहुत दुख हुआ। आख़िर क्यों? ये लोग, ये बच्चे बेकुसूर हैं। इनको किस जुर्म की सज़ा मिल रही है? कीका और बराको आज सुबह-सवेरे आए थे। इस वक़्त वे किचन में अम्मी-अब्बा के साथ खुसर-पुसर कर रहे हैं। कीका और अम्मी रोए जा रही हैं। मेरा ख़्याल है, उनकी समझ में नहीं आ रहा कि ठहरे रहें या चले जाएँ। दोनों रास्तों में कोई भी अच्छा नहीं। ज़लाता।

15 बुधवार अप्रैल 1992

मोमिलो मोहल्ले में खौफ़नाक गोलाबारी हुई है। मेरी दोस्त मेरीना को पूरे अड़तालीस घंटे तहख़ाने में गुज़ारने पड़े। मैंने उससे फ़ोन पर बात की, मगर ज़्यादा देर तक नहीं, क्योंकि उसे फ़ौरन दोबारा तहख़ाने में उतरना था। मुझे बहुत रंज हुआ। बोयाना और वीरिका तो इंग्लिस्तान जा रही हैं। औगा इटली जा रही है। और सबसे बुरी ख़बर यह है कि मारतीना और मालिया तो जा भी चुकी हैं। वो ओहरीद गई हैं (मकदूनिया में झील के किनारे का एक कस्बा)। कीका रो रही हैं। बराको रो रहे हैं। अम्मी रो रही हैं और 'वे' पहाड़ियों में सुरक्षित बैठे हुए लड़के हम पर निशाने लगा रहे हैं। मुझें अभी-अभी पता चला कि दियान भी चली गई। ओह, ओह, ओह जंग क्यों? बहुत-बहुत प्यार मेरी मेमी, ज़लाता।

20 सोमवार अप्रैल 1992

लगता है, जंग कोई मज़ाक़ नहीं है। यह तबाही लाती है, मार डालती है, दुख देती है। आज पुराने शहर के बीच बाशचार्शिया पर खौफ़नाक गोले गिरे। खौफ़नाक धमाके हुए। हम तहख़ाने में उतर गए। सर्द, अन्धेरे, घिनौने तहख़ाने में। और हमारा तहख़ाना इतना सुरक्षित भी है।

अम्मी, अब्बा और मैं एक कोने में एक दूसरे से चिमटे खड़े रहे जो कुछ सुरक्षित मालूम होता था। मैं अपने माँ-बाप के बाज़ुओं की गरमाई में खड़ी सराइवो से चले जाने के बारे में सोचती रही। हर कोई यही सोच रहा है। मैं भी यही सोच रही हूँ। यह मैं कैसे बर्दाश्त कर सकती हूँ कि मैं तो चली जाऊँ और मेरे अम्मी-अब्बा, दादी-दादा पीछे रह जाएँ? और सिर्फ़ अम्मी के साथ चले जाना भी कोई अच्छी बात नहीं होगी। सबसे अच्छा तो यह होगा कि हम तीनों साथ जाएँ, लेकिन अब्बा तो जा नहीं सकते। इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि हम सब इकट्ठे यहाँ ठहरे रहें। कल मैं कीका से कहूँगी कि उन्हें बहादुर बनना होगा, यहीं इन लोगों के पास ठहरना होगा जो उन्हें चाहते हैं। मैं अपने अम्मी-अब्बा से जुदा नहीं हो सकती और यह भी मुझे पसन्द नहीं कि मैं और अम्मी चली जाएँ और अब्बा यहीं रह जाएँ। तुम्हारी ज़लाता।

21 मंगलवार अप्रैल 1992

आज सराइवो में क़ियामत का दिन है। धायँ-धायँ करते गोले गिर रहे हैं, लोग और बच्चे मर रहे हैं, गोलियाँ चल रही हैं। शायद आज पूरी रात हमें तहख़ाने में गुज़ारनी पड़ेगी। हमारा अपना तहख़ाना सुरक्षित नहीं है, इसलिए हम बोबार ख़ानदान के यहाँ जा रहे हैं। बोबार ख़ानदान में ये लोग हैं: दादी मीरस, ख़ाला बोदा, ख़ालू जीका, माया और बोयाना। जब गोलियाँ चलना बहुत तेज़ हो जाती है तो जीका हमें फ़ोन कर देते हैं और हम आँगन में दौड़ लगाकर मेज़ और ज़ीने पर चढ़कर उनके यहाँ पहुँच जाते हैं और दरवाज़ा खटखटाते हैं। परसों तक हम गली में से उनके घर जाया करते थे मगर अब गोलियाँ चल रही हैं और गली से जाना ख़तरनाक है। मैं तहख़ाने में जाने की तैयारी कर रही हूँ। मैंने अपने झोले में बिस्किट, जूस के डिब्बे, ताश की गड्डी और दूसरी अल्लम-ग़ल्लम चीज़ें भर ली हैं। इस वक़्त भी मुझे तोपों की आवाज़ आ रही है और उससे मिलती-जुलती एक और आवाज़। प्यारी मेमी! ज़लाता।

2 शनिवार मई 1992

आज सचमुच सराइवो में सबसे बुरा दिन था। गोलियाँ चलना दोपहर के क़रीब शुरू हुईं। अम्मी और मैं हॉल-कमरे में आ गए। अब्बा उस वक़्त फ़्लैट के नीचे अपने दफ़्तर में थे। हमने इंटरफ़ोन पर उनसे कहा कि निकलकर नीचे लॉबी में आ जाएँ। हम वहीं मिलेंगे। मेरी पालतू

मैना किचकू भी हमारे साथ आई। गोलाबारी तेज़ हो गई थी। और हम दीवार फलाँगकर बोबार ख़ानदान के यहाँ नहीं जा सकते थे। इसलिए हम दौड़कर अपने तहख़ाने में उतर गए।

यह तहख़ाना घिनौना, अन्धेरा और बदबूदार है। अम्मी को, जिन्हें चूहों से डर लगता है, इस बार दो चीज़ों से डरना पड़ा। हम तीनों उसी कोने में खड़े हो गए जहाँ पिछली बार खड़े थे। हम दम साधे खड़े ऊपर से आती, फटते हुए गोलों, गोली चलने और धमाकों की आवाज़ें सुनते रहे। हमें हवाई जहाज़ों तक की आवाज़ें सुनाई दीं। एक पल मुझे ख़्याल आया कि यह डरावना तहख़ाना ही वो अकेली जगह है जहाँ हमारी ज़िन्दगी बच सकती है। फिर अचानक यह तहख़ाना गर्म और अच्छा लगने लगा। इसी तरह तो हम इस ख़ौफ़नाक गोलाबारी का मुकाबला कर सकते हैं। हमने बाहर अपनी गली में शीशे के टूटने के छनाके सुने। ख़ौफ़नाक! मैंने उन ख़ौफ़नाक आवाज़ों को रोकने के लिए अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं। मैं अपनी मैना किचकू के लिए फ़िक्रमंद थी। हम उसे लॉबी ही में छोड़ आए थे। कहीं वह सर्दी में ठिठुरकर मर न जाए। उसे कोई गोली न लग जाए। भूख और प्यास के मारे बुरा हाल हो रहा था। हम अपना आधापका खाना किचन ही में छोड़ आए थे।

जब गोलाबारी कुछ ठंडी पड़ी तो अब्बा दौड़कर फ़्लैट में गए और वहाँ से कुछ सैंडविच उठा लाए। उन्होंने बताया कि अन्दर कुछ जलने की बू आ रही थी और यह कि टेलीफ़ोन काम नहीं कर रहा। अब्बा टी.वी. भी तहख़ाने में ले आए थे, तभी हमें पता चला कि हमारे पास का बड़ा डाकघर आग की लपेट में है और उन लोगों ने हमारे राष्ट्रपति को बंधक कर लिया है। रात आठ बजे हम अपने फ़्लैट में वापस आए। हमारी गली के लगभग हर मकान के शीशे किरची-किरची हो चुके थे। खुदा का शुक्र, हमारी खिड़कियाँ सलामत थीं। मैंने डाकघर में शोले भड़कते देखे।

कैसा भयानक दृश्य! आग बुझाने वाले भड़कती आग से ज़ोर आज़माई कर रहे थे। अब्बा ने शोलों में घिरे डाकघर की कुछ तस्वीरें उतारीं। उन्होंने कहा कि ये तस्वीरें ठीक नहीं आएँगी, क्योंकि मैं (ज़लाता) कैमरे से छेड़छाड़ करती रही हूँ। सारे फ़्लैट में जलने की बू फैली हुई थी। ओह मेरे खुदा! मैं रोज़ इसी डाकघर के सामने से गुज़रती थी। इन्हीं दिनों इसका रंग-रौगन पूरा हुआ था। यह बहुत आलीशान और ख़ूबसूरत था और शोले उसे भस्म कर रहे थे। डाकघर ग़ायब होता चला जा रहा था। हमारे पड़ौस की दूसरी इमारतों का भी यही हाल है। प्यारी मेमी, पता नहीं सराइवो के दूसरे इलाक़ों का क्या हाल होगा।

हमें रेडियो से पता चला कि क़ायमी शोलों के आसपास बड़ी बरबादी हुई है। इमारतें

शीशे के मलबे में घुटनों तक धँसी हुई हैं। हम नाना-नानी के लिए फ़िक्रमंद हैं, वे उसी मोहल्ले में रहते हैं। कल अगर हम बाहर निकल सके तो उनकी ख़ैरियत मालूम करेंगे। कैसा हौलनाक दिन! मेरी ग्यारह बरस की ज़िन्दगी में कभी ऐसा ख़ौफ़नाक दिन नहीं आया। ख़ुदा करे, ऐसा दिन फिर न आए।

अम्मी और अब्बा बहुत बेचैन हैं। मुझे नींद आ रही है। मैं सोने जा रही हूँ, चाओ। ज़लाता।

7 गुरुवार
मई 1992

प्यारी मेमी, मुझे यक़ीन था कि जंग रुक जाएगी मगर आज फिर...... आज हमारे घर के सामने एक गोला फटा। उसी पार्क में जहाँ मैं अपनी सहेलियों के साथ खेला करती थी। बहुत सारे लोग ज़ख्मी हुए। सुनती हूँ याका, याका की माँ, सलमा, नैना, हमारे पड़ौसी दादू और न जाने कितने और लोग जो उस वक़्त वहाँ थे, ज़ख्मी हो गए। दादू, याका और उसकी माँ अस्पताल से घर आ गए हैं। सलमा का एक गुर्दा जाता रहा मगर मैं नहीं जानती कि वह कैसी है, क्योंकि वह अभी अस्पताल में है। और नैना। सुनो, नैना मर गई है। लोहे का एक टुकड़ा उसके दिमाग़ में जा घुसा और वह फ़ौरन मर गई। वह इतनी प्यारी-सी अच्छी-सी लड़की थी। मैं और वह किंडर गार्डन साथ-साथ जाते थे। और पार्क में इकट्ठे खेलते थे। क्या सचमुच मैं अब नैना को कभी नहीं देखूँगी? नैना, एक मासूम, ग्यारह साला छोटी-सी लड़की! एक बेवकूफ़ी की जंग उसे मुझ से कितनी दूर ले गई। मैं ग़मगीन हूँ। मैं रोती हूँ और हैरतज़दा हूँ कि यह कैसे हो गया! उसने तो कोई कुसूर नहीं किया था। एक घिनौनी जंग ने एक खिलती हुई बच्ची की ज़िन्दगी छीन ली। नैना! तुम हमेशा मेरे दिल की गहराइयों के अन्दर ज़िन्दा रहोगी। मैं तुम्हें याद रखूँगी। प्यारी मेमी! ज़लाता।

20 बुधवार
मई 1992

गोले बरसने कम हो गए हैं। आज अम्मी ने अपने में इतनी बहादुरी पैदा की कि पुल पार कर लिया। वे नाना-नानी को देख आईं। और कई जानने वालों से मिल आईं। उन्होंने बहुत-सी ग़मनाक ख़बरें सुनीं। वे लौटीं तो बहुत उदास और बुझी-बुझी थीं। उनके भाई अपने काम से

गाड़ी में घर आते हुए ज़ख्मी हो गए। उनके भाई ज़ख्मी पड़े थे और उन्हें आज से पहले इस बात की ख़बर ही न थी। कितनी ख़ौफ़नाक बात है। उनकी टाँग में ज़ख़्म आए हैं और वे अस्पताल में हैं। अम्मी क्योंकर अस्पताल जाकर अपने भाई को एक नज़र देख सकती हैं? वे तो अब जैसे दुनिया के दूसरे सिरे पर हैं। जाननेवालों ने बताया कि वे ठीक हैं लेकिन अम्मी को यक़ीन नहीं आता और वे रोती रहती हैं। अगर यह गोलाबारी बन्द हो जाए तो वे ख़ुद अपनी आँखों से अपने भाई की हालत देख आएँ। मगर यह बन्द ही नहीं होती। अम्मी कहती हैं जब तक मैं ख़ुद अपने भाई को न देख लूँ, मुझे चैन नहीं आएगा। ज़लाता।

21 गुरुवार
मई 1992

अम्मी आज मामू बराको को देखने अस्पताल गईं। वे ज़िन्दा हैं। असल बात तो उनकी ज़िन्दगी है। लेकिन वे बुरी तरह ज़ख्मी हुए हैं। उनका घुटना टूट गया है। उस दिन दो सौ दूसरे ज़ख्मी लोग भी अस्पताल में लाए गए थे। अस्पताल वाले उनकी टाँग काटने को थे मगर उनके दोस्त सर्जन अदनान विजवार ने उन्हें पहचान लिया। टाँग न काटने का फ़ैसला किया और उन्हें ऑपरेशन थिएटर में ले गए। ऑपरेशन साढ़े चार घंटे तक होता रहा और डॉक्टर कहते हैं कि कामयाब रहा। मगर उन्हें एक मुद्दत तक बिस्तर पर पड़ा रहना पड़ेगा। उनकी टाँग में लोहे के डंडे, एक सांचा और दूसरी अल्लम-गल्लम चीज़ें डाल दी गई हैं। अम्मी बहुत ग़मगीन और फ़िक्रमंद हैं। नाना-नानी का भी यही हाल है। (मुझे अम्मी ने बताया, क्योंकि मैं उन दोनों से चौदह अप्रैल के बाद से नहीं मिली। घर से बाहर निकलने की कोई सूरत ही न थी।) मेरा ख़्याल है, मामू बराको की क़िस्मत अच्छी साबित हुई कि उनकी जान बच गई। मुझे उम्मीद है टाँग भी ठीक हो जाएगी। मामा, हौसला कीजिए शाबाश! तुम्हारी ज़लाता।

27 बुधवार
मई 1992

ख़ूनख़राबा! क़त्ल/दहशत! जुर्म! लहू/चीख़-पुकार! आँसू! नाउम्मीदी!

आज वासोमिश्कन स्ट्रीट की बुरी हालत है। दो गोले सड़क पर फटे और एक बाज़ार में। अम्मी उस वक़्त कहीं नज़दीक ही थीं। वे नाना-नानी के घर की तरफ़ भागीं। अब्बा का और

मेरा बुरा हाल था कि अम्मी घर नहीं पहुँचीं। मैंने इस मंज़र का कुछ हिस्सा टी.वी. पर देखा, लेकिन मुझे अब तक यक़ीन नहीं आ रहा कि मैंने वाक़ई यह सब देखा था! यह नाक़ाबिले यक़ीन है। मेरा कलेजा मुँह को आ रहा है और पेट में गिरहें पड़ रही हैं। ख़ौफ़नाक! लोग ज़ख़्मियों को अस्पताल ले जा रहे हैं। यह तो पागलख़ाना है। हम बार-बार खिड़की की तरफ़ जाते। इस उम्मीद में कि अम्मी आती नज़र आएँगी लेकिन अम्मी नहीं आईं। फिर मरनेवालों और ज़ख़्मियों की फ़ेहरिस्त आनी शुरू हुई। अब्बा और मैं अपने बाल नोच रहे थे। हम नहीं जानते थे, अम्मी के साथ क्या हुआ? क्या वे ज़िन्दा हैं? शाम चार बजे अब्बा ने अस्पताल जाकर पता लगाने का फ़ैसला किया। वे कपड़े पहनकर तैयार हुए और मैं बोबार ख़ानदान के घर चली गई ताकि घर में अकेली न रह जाऊँ। मैंने एक बार और खिड़की में से बाहर देखा...अम्मी पुल पर से भागी चली आ रही थीं। घर में दाख़िल होते ही वे काँपने और रोने लगीं। उन्होंने रोते-रोते हमें बताया कि हर तरफ़ जली हुई, बिखरी हुई लाशें पड़ी हैं। हमारे पड़ौसी भी आ गए, क्योंकि उनको भी अम्मी की फ़िक्र थी। खुदा तेरा शुक्र! अम्मी हमारे पास हैं। खुदा तेरा शुक्र। एक हौलनाक दिन। कभी न भुलाया जाने वाला ख़ौफ़नाक। तुम्हारी ज़लाता।

30 शनिवार
मई 1992

शहर का मैटरनिटी अस्पताल जलकर खंडहर हो गया। मैं उसी अस्पताल में पैदा हुई थी। अब हज़ारों-लाखों दुनिया में आने वाले बच्चे, सराइवो के नए शहरी, उस अस्पताल में आँखें खोलने के सौभाग्य से महरूम रहेंगे। यह अस्पताल नया-नवेला और शानदार था। आग ने सब कुछ भस्म कर दिया। माँओं और बच्चों को बचा लिया गया। ज़हाँ सराइवो में लोग मारे जा रहे हैं, ग़ायब हो रहे हैं, घर और इमारतें आग लगने से राख हो रही हैं, वहीं नई ज़िन्दगियाँ भी जन्म ले रही हैं! तुम्हारी ज़लाता।

19 गुरुवार
नवम्बर 1992

सियासत के मोर्चे पर कोई ख़ास बात नहीं। वे लोग कुछ सुकून देने का इन्तज़ाम कर रहे हैं। लड़कों की बातचीत चल रही है और हम मर रहे हैं। सर्दी में ठिठुर रहे हैं, फ़ाक़े कर रहे हैं, रो

रहे हैं, अपने दोस्तों से बिछुड़ रहे हैं, अपने प्यारों से जुदा हो रहे हैं।

मैं इस मूर्खता की राजनीति को समझने की कोशिश करती रहती हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि यह राजनीति ही इस जंग का कारण है। यही इस जंग को रोज़मर्रा की हक़ीक़त बनाने की ज़िम्मेदार है। मेरी समझ में तो यह आता है कि इस सियासत का मतलब सर्ब, क्रोएट और मुसलमान लोग हैं। लेकिन ये सब तो लोग हैं, इंसान हैं! वे सब एक जैसे हैं, वही एक से बाज़ू, टाँगें, सिर। वे सब इन्सान ही दिखाई देते हैं। उनमें कोई फ़र्क़ नहीं है। वे सब चलते-फिरते, बातें करते हैं। लेकिन अब कोई ऐसी चीज़ उनके बीच में आ पड़ी है जो उन्हें एक दूसरे से अलग बना रही है।

मेरी सहेलियों में, हमारे दोस्तों में, ख़ुद हमारे ख़ानदान में सर्ब, क्रोएट और मुसलमान लोग मौजूद हैं। यह एक मिलाजुला ग्रुप है और मुझे यह मालूम तक न था कि कौन सर्ब है, कौन क्रोएट और कौन मुसलमान। अब यह सियासत उन्हें बाँट रही है। उसने सर्बों पर ''स'', क्रोएटों पर ''क'' और मुसलमानों पर ''म'' लिख दिया है और उनको एक-दूसरे से अलग कर देना चाहती है। और लिखने के लिए उसने सबसे घिनौनी, सबसे काली पेंसिल चुनी है। जंग की पेंसिल जो सिर्फ़ मुसीबत और मौत के अक्षर लिख सकती है।

यह सियासत क्यों हमें एक दूसरे से जुदा करके रंज और दुख देने पर तुली हुई है जब कि हम ख़ुद जानते हैं कि कौन अच्छा है, कौन बुरा? हम अच्छों से मेलजोल रखते हैं, बुरों से नहीं, और अच्छों में यही सर्ब, क्रोएट, और मुसलमान हैं। इसी तरह जैसे बुरों में हैं। यह सियासत मेरे पल्ले तो पड़ती नहीं। हाँ जी, मैं छोटी हूँ और सियासत का खेल बड़े लोग समझते और खेलते हैं। लेकिन हम छोटे इस खेल को ज़्यादा अच्छी तरह खेलते। हम यक़ीनन जंग का चुनाव न करते।

लड़के सचमुच खेल रहे हैं। और यही वजह है कि बच्चे-बच्चियाँ नहीं खेल रहे। हम ख़ौफ़ में रह रहे हैं। दुख और ग़म झेल रहे हैं। हम सुहानी धूप और फूलों से लुत्फ़ नहीं उठा रहे। हम अपने बचपन की खुशियाँ नहीं समेट रहे, हम रो रहे हैं।

मेमी, तुम कहोगी, मैं अपनी तरफ़ से बड़ा फ़लसफ़ा बघार रही हूँ। मगर मैं अकेली थी और मैंने सोचा कि तुम से ये बातें कर सकती हूँ। मेमी, तुम मेरी बातें समझती हो ना? मेरी ख़ुशबख़्ती कि तुम तो हो जिससे मैं दिल की बातें कर सकती हूँ। और अब प्यारा ज़लाता।

तूरी जनजाति की एक दन्तकथा

तूरी जनजाति की प्रमुख देवी सिंगबोन्गा यानी सूर्य है। और उनकी कहानियों में सूर्य मादा है। उनका मानना है कि सूर्य और चन्द्रमा बहनें हैं और उनके कई बच्चे थे। लेकिन जब सूर्य ने बहुत गर्मी फैलाई तो चन्द्रमा को डर लगा कि उसके बच्चे झुलस जाएँगे। इसलिए उसने अपने बच्चों को एक मिट्टी के मटके में छुपा दिया। जब सूर्य ने चन्द्रमा से उसके बच्चों के बारे में पूछा तो चन्द्रमा ने जवाब दिया कि उसने अपने बच्चों को खा लिया है। यह सुनकर सूर्य ने भी अपने बच्चों को खा लिया। लेकिन जब रात हुई तो चन्द्रमा ने अपने बच्चों को मटके से निकाला और आकाश में बिखेर दिया और वे तारे बन गए। जब सूर्य को यह पता चला तो वह बहुत गुस्सा हो गई और उसने कसम खाई कि कभी भी चन्द्रमा का मुँह नहीं देखेगी। इसी वजह से चन्द्रमा दिन में नहीं दिखता है, और चूँकि सूर्य ने अपने सभी बच्चों को खा लिया, इसलिए दिन में तारे भी नहीं दिखते हैं।

बिरहोर जनजाति की इसी तरह की कहानी के अन्त में कहा जाता है, ''सूर्य ने अपने बच्चों को खाना शुरू किया। लेकिन एक बच्चा दूर किसी जगह नाचने गया था और बच गया। भुरका नाम का यह बच्चा अब 'सुबह के तारे' के रूप में दिखता है।''

('मिथ्स ऑफ मिडिल इण्डिया'
(वेरियर एल्विन) से साभार)

चित्र : हुताराम अधिकारी

पृथ्वी, सूरज

अक्टूबर' 95 मे

तुम भी इस

मध्य भारत की आदिवासी
यही बात सुनने को मिलती
चाँद व सूर्य ने अपने ब
सचमुच और चन्द्रमा ने
बिरहोर, खरवार, वर्ली व
मुख्य कहानी थोड़े-बहुत ब

वैज्ञानिक तरीक़े
काफ़ी सही रूप से सम
बनता ही नहीं ख़त्म भी ह
हैं। यानी हम कह सकते
है, जो करोड़ों वर्ष लम्बा
तारा ख़त्म होने की बात
जान गए हैं कि पूरे ब्रह्मां
एक-एक मन्दाकिनी में
ब्रह्मांड में बदस्तूर कई ता
नए तारे बन रहे हैं।

कौन-सी बात ज़्य
आई? तूरी जनज
वैज्ञानिक जानकारी
क्या समझ में नहीं

त, चाँद, तारे

ें पूर्ण सूर्य ग्रहण

के बारे में जानो

लोक कथाओं में आमतौर पर
है कि तारे इसलिए बने क्योंकि
च्चों को खा लिया था। सूर्य ने
झूठ-मूठ। बैगा, संथाल, तूरी,
अन्य कई जनजातियों में यही
दले रूप में मिलती है।

ते तारा बनने वाली बात अब
झ में आ चुकी है। तारा सिर्फ़
ता है। या यूँ कहो कि मरता भी
हैं कि उसका एक जीवन काल
है। जनजातियों की कथाओं में
कहीं नहीं दिखती। वैज्ञानिक अब
ड में अरबों मन्दाकिनियाँ हैं और
अरबों तारे हैं। लेकिन साथ ही
रे ख़त्म हुए जा रहे हैं और कई

❑ विनोद रायना

ादा आसानी से समझ ाति की दन्तकथा या ? वैज्ञानिक जानकारी में आया, हमें लिखो।

तारों का बनना

ब्रह्मांड में गैस के विशाल बादल होते हैं। बादलों के कण गुरुत्वाकर्षण के कारण एक जगह सिकुड़ने लगते हैं। सिकुड़ने की इसी क्रिया के साथ तारा बनने का सिलसिला शुरू हो जाता है। (चित्र-1)।

सिकुड़ने के कारण गैसों के कण एक-दूसरे से पहले से अधिक टकराने लगते हैं। इससे तारे का अन्दरूनी हिस्सा बहुत गर्म होने लगता है। कितना गर्म? हमारे सबसे नज़दीकी तारे-सूर्य का अन्दरूनी हिस्सा डेढ़ करोड़ डिग्री सेल्सियस तापमान पर है। इस तापमान के कारण तारे में जमा हायड्रोजन नाभिकीय प्रक्रिया में हीलियम में तब्दील होता है। जिसके कारण तारे में भयंकर ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है और वह चमकता हुआ दिखता है (चित्र-2)। तारा बनने की विस्तृत कहानी तुम इसी अंक में कहीं और पढ़ोगे।

सूर्य जैसे तारे लगभग दस करोड़ वर्ष इस स्थिति में रहते हैं। उसके बाद उनके ख़त्म होने की प्रक्रिया शुरू हो जाती। ऐसे में तारों का बाहरी हिस्सा फैलने लगता है और वह आकार में ख़ूब बड़ा हो जाता है। सूर्य की जब यह स्थिति आएगी (आज से पाँच करोड़ साल बाद) तो वह इतना बड़ा हो जाएगा कि पृथ्वी भी उसमें समा जाएगी (चित्र-3)।

इस स्थिति के बाद सूर्य जैसा तारा असन्तुलित हो जाता है और उसका बाहर का पदार्थ उससे अलग हो जाता है (चित्र-4)। लेकिन अगर तारे का शुरू का वज़न सूर्य से 3 गुना या उससे भी अधिक हो तो तारा एक धमाके से फूट जाता है (चित्र-5)।

तारे का अन्त होता है एक छोटे सफ़ेद बौने के रूप में (चित्र-6)।

गैस के इस विशाल बादल में (इसे रोज़ेट नेबुला कहते हैं) नए तारे बन रहे हैं (चित्र-7)।

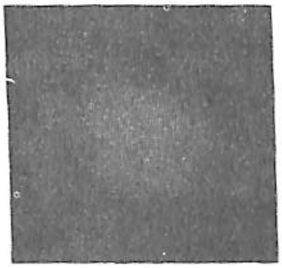
1

2

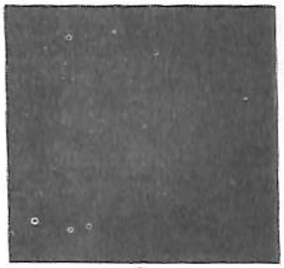
3

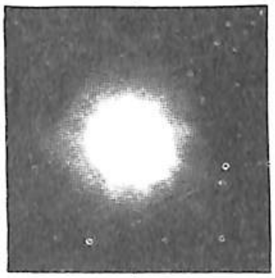
4

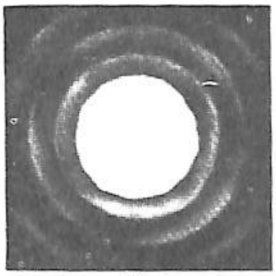
5

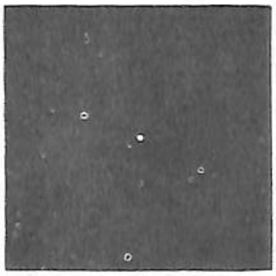
6

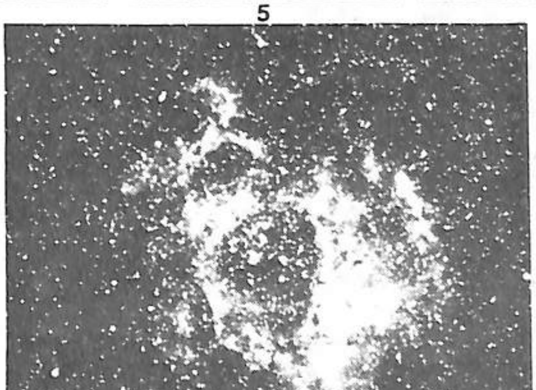
7

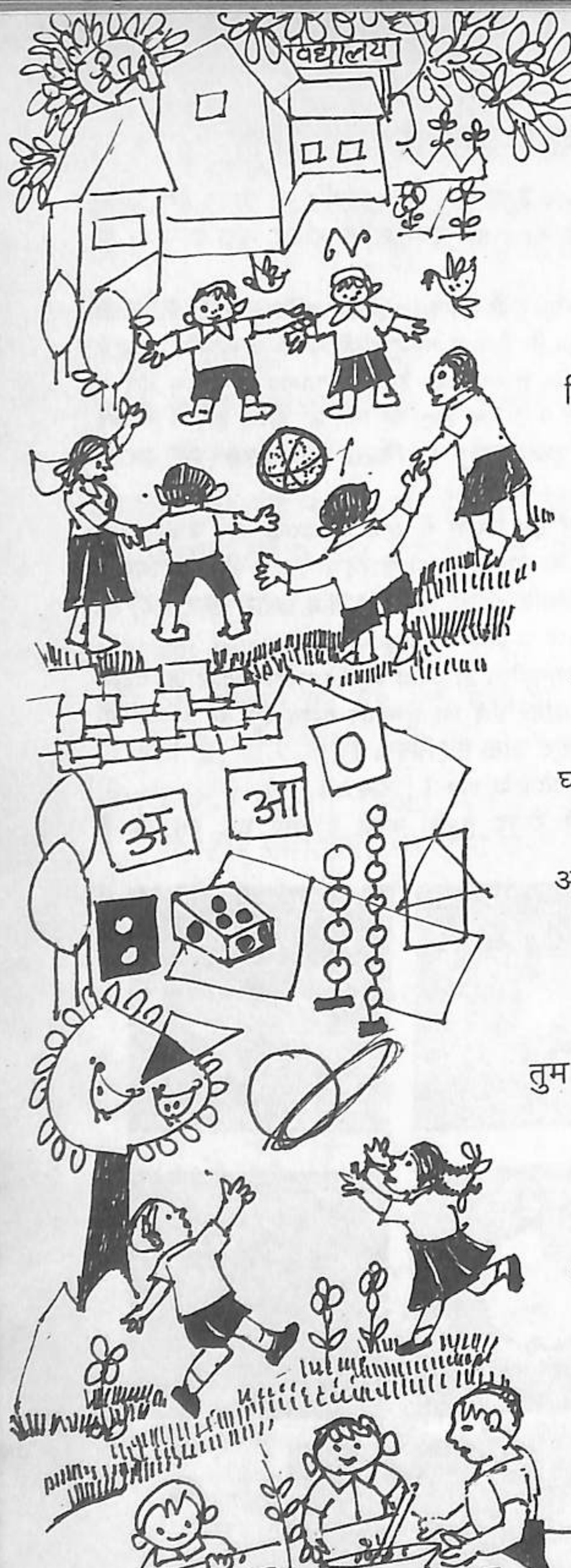

बच्चे

हम पहली के बच्चे हैं
अधरे पक्के कच्चे हैं।
एक साल हो गया हमें
इस विद्यालय में आए
पिछले पूरे साल में हमने
कितने मज़े उड़ाए।
रंग-बिरंगे कागज़ काटे
काट-काट चिपकाए
खेले कूदे, पढ़े लिखे
और ढेरों गाने गाए।
पूरी-छोले, इडली-सांभर
क्या-क्या माल उड़ाए
घर जाकर अपने स्कूल के
क़िस्से ख़ूब सुनाए।
आने वाले साल में भी हम
मिलकर मौज उड़ाएँगे
नई-नई चीज़ें सीखेंगे
बढ़िया गाने गाएँगे।
तुम सब जो इस साल आए हो
साथ हमारे खेलोगे
साथ-साथ गाने गाओगे
संग-संग झूले झूलोगे।
धीरे-धीरे साथ-साथ हम
ऊपर चढ़ते जाएँगे
नए-नए बच्चों को ऐसे
गाने सदा सुनाएँगे।

● सफ़दर हाश्मी
(सहमत के सौजन्य से)
चित्र ● शोभा घारे

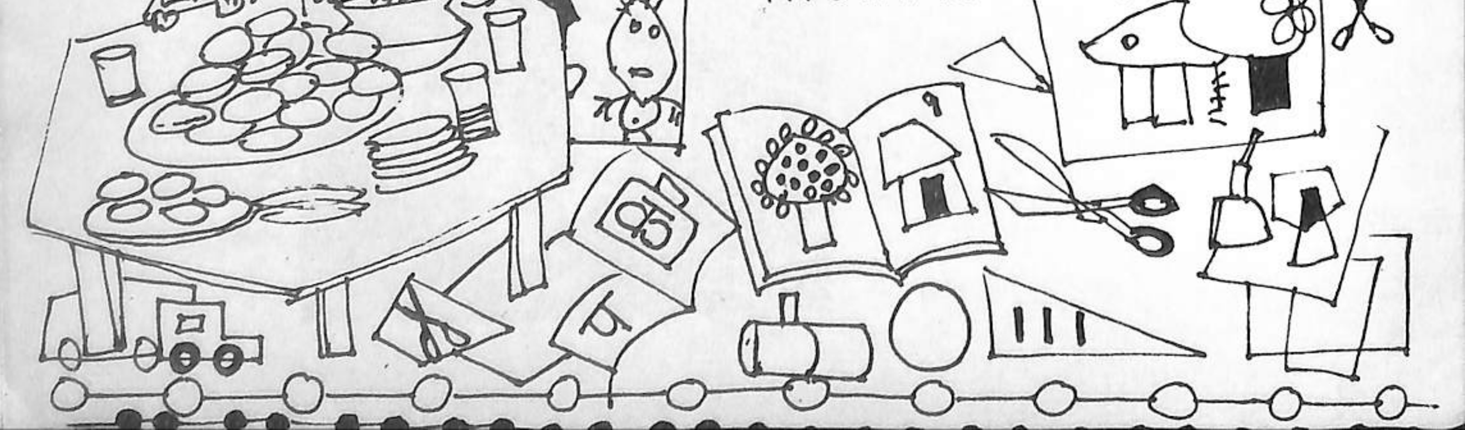

कैसे होता है तारों का जन्म

लो, यह भी कोई बात हुई? कहीं तारों का जन्म होता है? जैसे तारा नहीं कोई मनुष्य हो।

तारा मनुष्य न सही, पर उनका मनुष्य की तरह ही जन्म होता है और मृत्यु भी। यह तो तुम जानते ही होगे कि अंतरिक्ष में धूल और गैस के कण होते हैं। हायड्रोजन और हीलियम गैस अंतरिक्ष में अन्य गैसों की तुलना में अधिक होती है। ये गैसें और धूल के कण अंतरिक्ष में यहाँ-वहाँ बिखरे रहते हैं। और ये सभी जगह एक-से नहीं होते हैं। कहीं कम तो कहीं ज़्यादा। ठीक उसी तरह जिस तरह नाश्ते की छुट्टी में स्कूल ग्राउण्ड में बच्चे झुण्ड बनाकर खेलते-बैठते हैं। कहीं झुण्ड ज़्यादा होता है तो कहीं कम।

जहाँ गैस बहुत ज़्यादा होती है यानी घनत्व ज्यादा होता है, वह स्थान गैस मेघ कहलाता है। तारों का जन्म इन्हीं गैस मेघों में होता है। यहाँ एक बात यह ध्यान में रखना चाहिए कि बार-बार गैस मेघ के नाम से कहीं ऐसा न लगे कि इनमें सिर्फ़ गैस होती है। गैस के साथ ही इनमें धूल कण आदि भी होती हैं।

इन गैस मेघों में जगह-जगह गैस और धूल के कण गुरुत्वाकर्षण के कारण सिकुड़ने लगते हैं। यह ठीक वैसे ही होता है जैसे गुब्बारे की हवा निकालने पर वह धीरे-धीरे छोटा आकार लेने लगता है। अब जैसे-जैसे ये गैस मेघ सिकुड़ते जाते हैं, इनका ताप, घनत्व और दाब भी वैसे-वैसे बढ़ता जाता है। घनत्व बढ़ना यानी कणों का बहुत पास-पास आ जाना।

पर यह सिकुड़न गैस मेघों में सभी तरफ से एक-सी नहीं होती। इनका जो बीच का भाग या केन्द्र होता है वह बहुत ही ज़्यादा सिकुड़ जाता है। फिर एक समय ऐसा आता है जब ये इकट्ठे हुए कण एक गेंद का रूप ले लेते हैं। यही तारे का जन्म समय माना जाता है और इस गेंद का आकार लिए कणों की जमघट को आदितारा कहते हैं।

लेकिन अभी तारा पूरा नहीं बना है। इसमें अभी कई और परिवर्तन होने हैं। गेंद के बीच का भाग अभी भी गर्म होता रहता है। तब तक जब तक कि ताप लगभग 10 लाख डिग्री सेल्सियस न हो जाए। इतने ताप पर नाभिकीय क्रियाएँ होने लगती हैं। यानी बहुत सारी ऊर्जा के बनने के साथ ही एक गैस का दूसरे में बदलना। चूँकि अंतरिक्ष में हायड्रोजन गैस सबसे ज़्यादा मौजूद रहती है, इसलिए इन क्रियाओं में हायड्रोजन गैस नाभिकीय क्रिया के ज़रिए हीलियम में बदलती जाती है। इससे गर्मी और रोशनी के रूप में ख़ूब सारी ऊर्जा निकलती है। इससे गेंद चमकने लगती है। इसे ही हम सब दूर गगन में चमकते हुए देखते हैं। यही तो तारा है।

पर यह तो थी सूर्य जितने या उससे भी बड़े तारों की बात। जो बहुत छोटे तारे होते हैं उनमें इतनी सब प्रक्रिया नहीं होती। शुरुआत तो उनकी भी गैस मेघों में कणों के सिकुड़कर पास आने और गर्म होते जाने से होती है। पर इसके बाद इनमें नाभिकीय क्रियाएँ नहीं होती हैं। ये छोटे तारे तब तक हल्के-हल्के चमकते रहते हैं जब तक कि उनकी सारी ऊर्जा ख़र्च न हो जाए।

है न तारों की कहानी अनोखी? इनकी मृत्यु की कहानी तुम इसी अंक में पढ़ ही चुके होगे। न पढ़ी हो तो ढूँढो। हाँ इस बात का ख़्याल रखना कि यह सारी प्रक्रिया बहुत धीरे लाखों-करोड़ों सालों में पूरी होती है। और यह निरन्तर चलती भी रहती है। यानी आज सूरज अगर अपने उम्र के हिसाब से अधेड़ है तो कई तारे बनकर मिट चुके हैं और कई और नए लगातार बनते जा रहे हैं।

❑ आशीष दलाल, खरगोन

खेल कागज़ का

मुर्गा

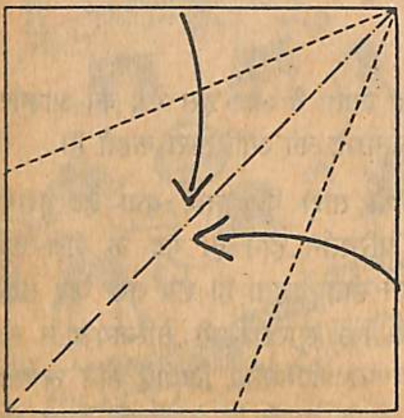

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

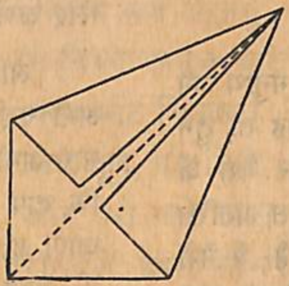

2. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रही बीच की टूटी रेखा पर से आकृति को मोड़ लो।

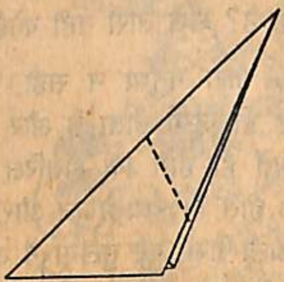

3. ऐसी आकृति बन जाएगी। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ।

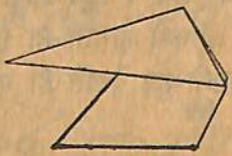

4. मोड़ पक्का करके वापस खोल लो। फिर उसी रेखा पर से दूसरी तरफ भी मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके खोल लो। इसके बाद आकृति का एक मोड़ और खोल लो। जो तुमने चित्र दो के अनुसार बनाया था।

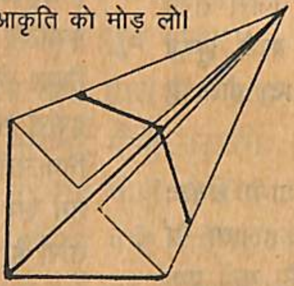

5. ऐसी आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।

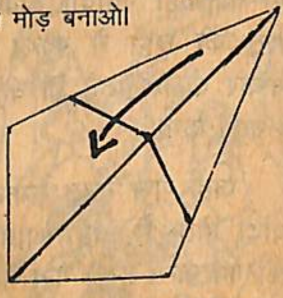

6. इस तरह की आकृति दिखेगी। अब मोड़ के कारण बनी रेखाओं पर से आकृति को तीर की दिशा में मोड़ लो। इस मोड़ को बनाते वक़्त दाएँ और बाएँ सिरों को आपस में नहीं मिलाना है बल्कि मोड़ से बनी रेखाओं पर ही मोड़ बनाना है।

7. इस तरह की आकृति बनेगी। तुम्हारी बनी या नहीं? कोशिश करो। इसके बाद चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से दोनों सिरों को अन्दर की ओर दबाते हुए मोड़ना है।

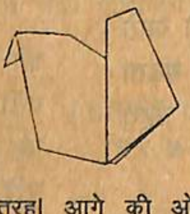

8. इस तरह। आगे की ओर चोंच बनेगी। चित्र में दिखाए अनुसार बनाओ।

9. कलगी और आँख बनाकर लगाने की जुगाड़ तुम खुद करो। मुर्गा तैयार है।

मुन्नू की स्वतंत्रता

❑ हरिशंकर परसाई

माँ, तुम तो कहती हो कि हमें स्वतंत्रता मिल गई। पर मैं जब आज भैया के कोट से फाउंटेनपेन निकालकर फ़र्श पर लिखने लगा तब तुम नाराज़ हो गईं और क़लम छीन ली।

और, रात को जब मैंने गरम दूध न पिया तब तुमने डाँटकर कहा, 'पी, नहीं तो एक तमाचा लगेगा।' और कटोरा मुँह से लगा दिया।

जब मैं सवेरे सड़क पर खेलने चला गया तो तुमने नौकर से पकड़ मँगवाया और कहा, 'सड़क पर गया तो टाँग तोड़ दूँगी।' भला यह भी कोई स्वतंत्रता है?

आज सवेरे जब मैंने पैंट पहनने से इन्कार कर दिया और कहा, 'मैं पैंट नहीं पहनूँगा, मैं स्वतंत्र हूँ। मैं नंगे ही खेलूँगा।' तब तुमने ज़बरदस्ती मुझे पैंट पहना दिया।

मैं जब भैया की तस्वीरों वाली मोटी पुस्तक को ध्यान से देखने लगा तब तुमने पुस्तक छीन ली और मुझे डाँटा। मैंने उसमें से एक ही तस्वीर तो अपने लिए फाड़ी थी।

मैं जब बाबूजी की दवात की स्याही से अपनी क़मीज़ को रंगकर झण्डा बनाने लगा तब तुमने दो तमाचे जड़ दिए। क्या तुमने मेरे झण्डे का अपमान नहीं किया?

जब मैं रोने लगा तब तुमने चिल्लाकर कहा, 'रोएगा तो एक तमाचा और लगाऊँगी।' क्या मुझे रोने की भी स्वतंत्रता नहीं है?

ठहरो, मैं अभी जवाहर लाल जी को चिट्ठी लिखता हूँ कि आप कहते हैं कि स्वतंत्रता मिल गई, किंतु मुझे तो रत्ती भर भी स्वतंत्रता नहीं मिली। आप तुरन्त अम्मा को लिख दीजिए जिससे वह मुझे स्वतंत्रता दे दें।

(परसाई जी ने यह कहानी 1949 में लिखी थी जब जवाहर लाल नेहरु देश के प्रधानमंत्री थे।)

चित्र : नितीश भट्टाचार्य

बोतल ब्रश

तुमने बोतल साफ़ करने वाला ब्रश देखा है? उसमें जिस तरह एक मोटे तार में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पतले तार लगे होते हैं उसी तरह इस पेड़ के फूल होते हैं। इस तरह के आकार वाले फूलों के कारण ही इस पेड़ को बोतल ब्रश कहा जाता है। मूलरूप से यह पेड़ ऑस्ट्रेलिया का है। हमारे देश में पंजाब और उत्तरप्रदेश के इलाक़ों में ख़ूब मिलता है। वैसे बगीचों को सजाने के लिहाज से यह सभी जगह लगाया जाता है।

यह सुन्दर पेड़ लगभग सारे साल हरा रहता है। इसकी ज्यादातर शाखाएँ नीचे की ओर झुकी झूलती रहती हैं। लटकती हुई इन शाखाओं में पत्तियाँ और फूल लगते हैं। पत्तियाँ लम्बी लेकिन कम चौड़ाई की और रोएँदार होती हैं। पत्तियाँ शाख पर चारों ओर से लगती हैं। इनके बीच-बीच में फूल लगते हैं। फूल मार्च और अक्टूबर में खिलते हैं।

इस पेड़ में कुछ मज़ेदार चीज़ें होती हैं जिन्हें जानकर तुम्हें भी मज़ा आएगा। इसकी शाखाएँ नीचे की ओर लटकती रहती हैं। इस वजह से शाखा के नीचे के सिरे की पत्तियाँ बड़ी और ऊपर की ओर की पत्तियाँ छोटी होती हैं। दूसरी एक चीज़ इसकी वृद्धि के बारे में है। जहाँ एक बार फूल खिल गए फिर उस जगह पर फल बनता है। फल में से बीज सूखकर नीचे गिर जाता है। अगली बार जब फिर फूल खिलने होते हैं तो शाखा के उसी हिस्से की आगे वृद्धि होती है। इसी नए हिस्से पर पत्ती, फूल, फल लगते हैं। इस तरह वृद्धि होने के कारण शाखाएँ लम्बी होती जाती हैं और नीचे की ओर लटकती रहती हैं।

इस पेड़ की कई प्रजातियाँ होती हैं। अलग-अलग प्रजाति में अलग-अलग रंग के फूल होते हैं। यह पेड़ बीज से लगाए जाते हैं। □□□

व्यंग्य कहानी

अकड़ घोंघों जी

❑ मंगल सक्सेना

हमारे एक दोस्त हैं। नाम आप चाहें जो रख लें। हम उनका असली नाम नहीं बताएँगे क्योंकि अचानक कहीं वे आपको मिल जाएँ और आप भी उन्हें पहचानकर 'अकड़ घोंघों' कहने लगें, जैसा कि उनके कुछ मित्र उन्हें कहते थे तो हमारी मुश्किल हो जाएगी। वे हमसे रूठ जाएँगे।

बात यह है कि अकड़ घोंघों जी हर बात में अकड़ जाते थे। जाने उन्हें किस बात का घमण्ड था, किसी से सीधे मुँह बात ही नहीं करते थे। अपने उन दोस्तों से भी अकड़कर बात करते थे जो वास्तव में उनका भला चाहते थे। दूसरे, उन्हें गुस्सा बहुत आता था। हर अकडू आदमी को आता ही है। उनके इस स्वभाव के कारण कोई उनसे खुश नहीं था। और कोई उन्हें अपने साथ रखना पसन्द नहीं करता था।

लेकिन यह बरसात की ऋतु क्या आई कि हमारे नन्हें 'अकड़ घोंघों' जी पर अचानक आफ़तों के ओले बरस पड़े। कुछ बुरा हुआ, कुछ अच्छा भी हुआ। बुरा तो यों कि अकड़ घोंघों जी को तकलीफ़ हुई और अच्छा यों कि उनकी सारी अकड़ बरसात में बह गई।

बात उस दिन की है जिस दिन रह-रहकर बारिश हो रही थी। उस दिन के पहले भी तीन-चार बार धुआँधार वर्षा हो चुकी थी। इसलिए जगह-जगह ज़मीन गीली थी। सड़क पर जहाँ मिट्टी थी वहाँ कीचड़ हो गई थी।

हमारे अकड़ घोंघों जी को बरसात बहुत बुरी लगती थी। जहाँ बूँदें पड़ने लगतीं कि नाक-भौं सिकोड़कर ज़मीन पर थूक देते।

बाहर उन्हें भी किसी न किसी काम से निकलना पड़ता था। उस दिन भी उन्हें कुछ कार्य था। बढ़िया पैंट, सफ़ेद क़मीज़ - धोबी से धुली हुई - निकाली, बढ़िया जूते और कपड़े पहनकर थैला व छाता लेकर बाहर निकले। माँ ने कहा, कि "बेटे हाफ़पैंट-क़मीज़ ही पहन लो। बरसात में तो एक खिलाड़ी की तरह रहना चाहिए। इतना सजधजकर बाहर न जाओ।" लेकिन वे बोले, "स्कूल बैंडमास्टर की तरह बाहर नहीं निकला जाता। हम तो जब भी घर से निकलेंगे ऐसी ही शान से निकलेंगे।" और वे बाहर चल दिए।

अभी गली में आए ही थे कि देखा एक जगह पानी इकट्ठा हो गया है और रास्ता रुक गया है। रास्ता बनाने के लिए मोहल्ले के स्काउट बच्चे और निशा, ऊषा रेत की कढ़ाइयाँ भर-भरकर ला रही थीं और वहाँ डाल रही थीं। अकड़ घोंघों जी कमर पर हाथ रखकर खड़े हो गए। ऊषा ने कहा, "भैया दो मिनट ठहर जाओ, हम अभी रास्ता तैयार कर देते हैं। फिर चले जाना।"

वैसे चाहे, अकड़ घोंघों जी ठहर जाएँ मगर ऊषा ने कह दिया तो फिर कैसे रह सकते हैं? उनकी अकड़ न कम हो जाएगी? आपने मुँह बनाकर कहा, "हमारे पास फ़ालतू कामों के लिए टाइम नहीं है। और हम तो अपना रास्ता खुद ही बना लेते हैं।" उन्होंने पास ही पड़ी एक ईंट उठाई और पानी के बीच में रखी। बड़ी ही लापरवाही और समझदारी दिखलाते हुए अकड़ घोंघों जी ने उस ईंट पर पैर रखा। ईंट कुछ नीचे धँस गई क्योंकि वहाँ रेत थी जो भीग चुकी थी। लेकिन उन्होंने कुछ परवाह नहीं की और छलाँग लगाई। इधर उनका एक पाँव पर ज़ोर देकर उछलना हुआ और उधर ईंट का टेढ़ा होना। बस, एक ओर अकड़ घोंघों जी पानी में छपाक से गिरे और दूसरी ओर उनका छाता। थैले में कीचड़-पानी भर गया। सारे कपड़े भी कीचड़ से लथपथ हो गए। जूते दलदल में फँस गए। सब देखने वाले ठठाकर हँस पड़े।

इस पर उन्हें और भी क्रोध आया। वे तमककर उठे। लेकिन जूता कीचड़ में इस तरह फँस गया था कि जूता वहीं धँसा रहा और पाँव निकल आया। उन्होंने जल्दी से झुककर जूता

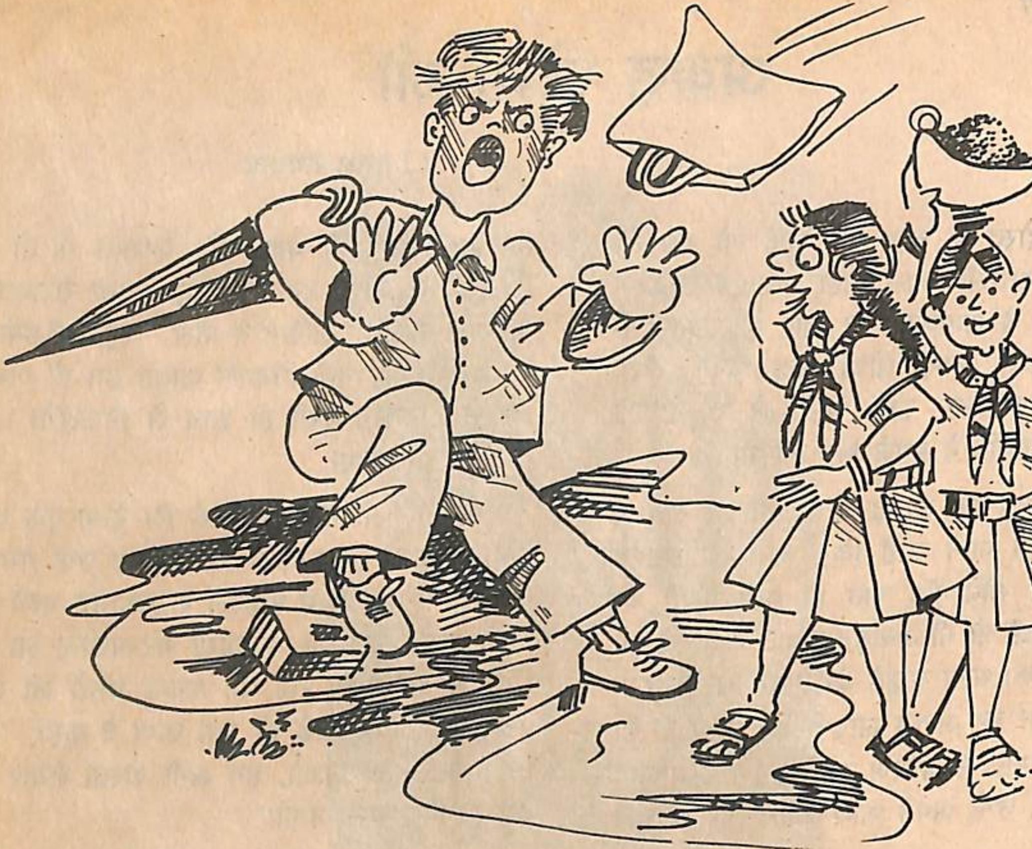

निकाला। छाता व थैला उठाकर जो फिर छलाँग लगानी चाही कि पतलून में पाँव अटक गया। लंगड़ाते-लंगड़ाते, कुछ अपने को गिरने से बचाने की कोशिश में छपाछप-छपाछप करते पानी से बाहर निकले कि एक औरत से टकरा गए। उसके सिर पर छाछ की हंडिया थी। वह रास्ता बनने का इन्तज़ार कर रही थी। उसके हाथ से हंडिया छूट गई और गिरी अकड़ घोंघों जी की पीठ पर। छाछ से सराबोर हो गए बेचारे। अब तो लोग बुरी तरह हँसने लगे। अनिल-सुनील भी ठहाका मार-मारकर हँस रहे थे और ऊषा-निशा का तो मारे हँसी के बुरा हाल हो रहा था। वे तो हँसी से दोहरी हुई जा रही थीं।

उनकी हँसी से अकड़ घोंघों जी को और भी गुस्सा आ गया। ऊषा ने कह दिया, "मैंने कहा था न भैया कि ठहर जाओ! जल्दी मचाई तो यह हाल हुआ!" फिर उसने हँसते हुए कहा, "बैल लग रहे हो, सच, काँच में देखना।"

"ठीक है, ठीक है। हम देख लेंगे तुम्हें।" अकड़ घोंघों जी ने पाँव पटकते हुए कहा और गुस्से से आग-बबूला होते हुए घर की ओर चले।

"लो हमने क्या किया भैया? हमसे क्यों नाराज़ हो रहे हो?" ऊषा और निशा ने एक साथ कहा।

"हम सब समझते हैं। तुमने ही हमारे पाँव के नीचे के पत्थर को डण्डे से हिला दिया था वरना हम हरगिज़ नहीं गिरते।" अकड़ं घोंघों जी क्रोध से नथुने फुलाते हुए बोले।

"अरे, बिलकुल नहीं भैया, तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ग़लत है।"

मगर अकड़ू आदमी गुस्से में कोई अकल की बात सोचता है, जो अकड़ घोंघों जी सोचते? वह तो बिना किसी की सुने छपाछप करते घर में घुस गए। कपड़े बदलते-बदलते वह बदला लेने की सोचने लगे। एक तो आदमी घमण्डी उस पर गुस्से की हालत में। ऊपर से ग़लतफहमी में। तब वह बदला लेने की नहीं सोचेगा तो और क्या सोचेगा?

अकड़ घोंघों जी को पूरा विश्वास था कि सारी बदमाशी ऊषा-निशा की ही है। इनको मज़ा चखाना चाहिए; उन्होंने एक ज़ोरदार योजना बनाई।

एक बात पहले ही बता दूँ जब आदमी ऐसी हालत में होता है जैसी हालत में अकड़ घोंघों जी थे तब वह ऐसी ही ऊटपटाँग योजनाएँ बनाता है।

अकड़ घोंघों जी ने घर के पुराने गद्दे में से ढेर-सी रुई निकालकर उसे स्याही से रंगा। फिर एक काले धागे से उसे एक लम्बी दाढ़ी के रूप में तैयार किया। इसी तरह उन्होंने खूब सारी रुई निकालकर और रंगकर उसे मोटी-झोटी व लम्बी-लम्बी रस्सी के रूप में बटकर जटाएँ बनाईं। फिर घर में से साबुन का खूब सारा चूरा लाकर झोली में भर लिया। और यह सब काम उन्होंने अपने कमरे में माँ से छुपकर किया। घर में और कोई था नहीं जिसे पता लगे। चुपके से पिताजी का पाजामा और कुरता भी ले आए। फिर उन्होंने अपना

मेकअप करना शुरू किया। गोंद से दाढ़ी-मूँछ चिपकाकर और धागों से कानों पर बाँधकर, बालों में जटाएँ बाँधी, पिताजी का कुरता-पाजामा पहना। कंधे में साबुनवाला झोला लटकाया, रसोई से चिमटा लिया। यों पूरे साधू बाबा बनकर वह तैयार हो गए। पाजामा लम्बा था इसलिए उसके पायचे ऊँचे चढ़ा लिए थे। अब वह माँ की खड़ाऊँ पहनकर ऊषा-निशा के घर की ओर चले।

उन्हें पता था इस समय ऊषा और निशा सिलाई के स्कूल से लौटती हैं। वह आकर गली में एक कोने में खड़े हो गए। बरसात के कारण कम ही लोग गली में आ-जा रहे थे। फिर अन्धेरा भी हो गया था। किसी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया।

हलकी-हलकी बूँदें पड़ने लगी थीं। अकड़ घोंघों जी की योजना थी कि पहले वे दोनों लड़कियों को डराएँगे और जब वे घबराकर गिर पड़ेंगी, होश-हवास भूल जाएँगी तब उनके सिर में ढेर सारा साबुन का चूरा डालकर भाग जाएँगें। इस तरह उनके बुरा चाहने वाले दिल को शान्ति मिलेगी।

थोड़ी ही देर में गली के मोड़ से लड़कियाँ आती दिखाई दीं। अकड़ घोंघों जी चिमटा उठाकर बिलकुल तैयार हो गए। जैसे ही ऊषा और निशा सामने आईं वे ज़ोर से 'अलख निरंजन' कहकर चिमटा बजाते हुए उनके सामने आ खड़े हुए।

ऊषा और निशा ठिठक गईं। एक बार तो उनका दिल धक-से रह गया। थोड़ा डर-सा लगा और वे क्षण भर को घबरा भी गईं।

इधर अकड़ घोंघों जी ने समझा कि लड़कियाँ डर गई हैं और हमारी जीत निश्चित है। वे और भी ज़ोर से गुर्राकर बोले, "बच्चियों! आँखें बन्द करो, सिर झुकाओ वरना हम तुम्हें मार देंगे।" और यह कहकर उन्होंने फिर चिमटा बजाया और लड़कियों पर झपटे। अकड़ घोंघों जी ने एक चतुराई की थी। अपनी आवाज़ बदल ली थी। इसलिए लड़कियाँ एकाएक उन्हें नहीं पहचान पाई थीं।

लेकिन अब तक ऊषा-निशा भी सँभल गई थीं। उन्होंने कहा, "आइए बाबाजी, आप हमारे घर चलिए, हम आपकी वहाँ अच्छी तरह खातिरदारी

करेंगी।" यह सुनकर अकड़ घोंघों जी ने सोचा, मालूम पड़ता है ये डरी नहीं हैं। यह सोचकर वे घबराए। क्षण भर के लिए उनकी बुद्धि जवाब दे गई। उन्होंने सोचा अब क्या होगा? अगर इनके साथ चले गए तो पोल खुल जाएगी और बदला भी नहीं ले सकेंगे। उन्होंने आव देखा न ताव, झोली में से मुट्ठी भर साबुन का चूरा उनकी ओर फेंका और चिल्लाए, "हमें प्रणाम करो वरना हम जादू की पुड़िया से तुम्हें चुहिया बना देंगे।"

जैसे ही साबुन का चूरा लड़कियों के मुँह पर आकर पड़ा उन्हें भी गुस्सा आ गया। अब तो वे भी झपटीं, उन्होंने कहा, "बाबाजी! हम खुद तुम्हें ले चलती हैं अपने घर।" अकड़ घोंघों जी ने पीछे क़दम हटाए। लड़कियाँ और तेज़ी से झपटीं। अकड़ घोंघों जी खड़ाऊँ पहने थे, लड़खड़ाकर गिर पड़े।

'बदमाश, बदमाश' कहकर ऊषा और निशा चिल्लाईं। बरसात के डर से दीवारों की आड़ में छिपे हुए कुत्ते भी निकल आए। राह चलते हुए आदमी भी आ गए।

अकड़ घोंघों जी जहाँ गिरे थे वहाँ पानी था। जटाएँ और कपड़े भीग गए। जान बचाने के लिए सामने की ओर भागे। हड़बड़ाहट में उनके हाथ का झोला उनके ही सिर पर उलट गया। खड़ाऊँ पहने भागा भी नहीं गया तो वे गिरते-पड़ते खड़ाऊँ उतारकर भागे। सबसे बड़ा डर था उन्हें कि पहचाने न जाएँ, वरना बहुत हँसी होगी। वे सरपट भागे और सामने खेल के मैदान के दूसरे छोर पर आकर ही दम लिया। लेकिन तभी बड़े ज़ोर की बिजली कड़की और मूसलाधार बारिश होने लगी। अकड़ घोंघों जी ने बरसात से बचने के लिए छुपने की जगह ढूँढी। मगर खेल के मैदान में छुपने की जगह कहाँ?

पानी से भीगकर उनकी रुई की दाढ़ी और जटाएँ इतनी भारी हो रही थीं कि गाल नुच रहे थे। और सिर भारी हो रहा था जैसे दस किलो वज़न रख दिया हो।

भागने से पाजामे के पांयचे भी उतर गए थे और उनसे चला नहीं जा रहा था वे बार-बार लड़खड़ा जाते थे और गिर पड़ते थे। ज़ोर की बिजली कड़कती और डर जाते। बरसात के पानी से भीगकर सिर में पड़ा साबुन बह-बहकर आँखों में और मुँह में जा रहा था। बार-बार आँखों को मसलते, बार-बार मुँह कड़ुवा हो जाता और वे थूकते। थू-थू - कैसा बेवकूफ़ हूँ। यह सोचा ही नहीं कि वे लड़कियाँ चिल्ला भी सकती हैं? लोग इकट्ठे भी हो सकते हैं। सिर इतना भारी हो रहा था कि वह हिला भी नहीं पा रहे थे। इच्छा हो रही थी कि ज़ोर से ठुनक-ठुनक कर रोएँ। दोनों हाथों से

उन्होंने अपनी जटाएँ नोच-नोचकर फेंकनी शुरू कर दीं। दाढ़ी भीगकर अपने आप ही उतर गई।

इधर वह सिर का जटा-जूट उतार ही रहे थे कि कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने देखा, दो-तीन कुत्ते भौंकते हुए भागते आ रहे हैं और पीछे-पीछे लालटेन लिए छाता लगाए कुछ आदमी, स्त्री और बच्चे चले आ रहे हैं। अब तो वे और भी सिटपिटाए। मर गए अब क्या करें। 'हे भगवान', वे बुदबुदाए 'कहीं छुपने की जगह नहीं। जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?' आँखों में साबुन लगने से आँखें जलन के मारे खुल ही नहीं रही थीं। दोनों हाथों से पाजामा पकड़े रहने से वे आँखें नहीं मल पाते थे और आँखें मलते तो पाजामा नीचे लटक जाता और चला नहीं जाता था।

आख़िर रुआंसे होकर धम्म से नीचे बैठ गए और उन्होंने दोनों टाँगों में सिर को छिपा लिया। इतने में मोहल्ले के लोगबाग लालटेन लिए आ गए। ऊषा, निशा और अनिल-सुनील भी थे। अकड़ घोंघों जी के पिता भी थे। सबने उन्हें पहचान लिया।

अकड़ घोंघों जी तो सिर को टाँगों में छुपाए बैठे रहे। किसी तरह उनका सिर उठाया गया। दाढ़ी और जटाओं की स्याही भीगकर मुँह पर फैल गई थी और मुँह व हाथ स्याही से काले हो रहे थे। फिर सब ठठाकर हँस पड़े। सबका हँसना था कि अकड़ घोंघों जी ज़ोर-ज़ोर से रो दिए। आखिर उनके पिताजी उन्हें समझाते हुए घर ले गए।

अब अकड़ घोंघों जी सबसे मिलजुल कर रहते। और अपने को सबसे अधिक बुद्धिमान नहीं समझते। और बरसात आदि का असली मज़ा लेते हैं। गली-मोहल्ले में कहीं बरसात में नुकसान हो जाए तो ठीक करने वालों की सहायता करने तुरन्त पहुँच जाते हैं।□

(डॉ. हरिकृष्ण देवसरे द्वारा सम्पादित 'बच्चों की सौ कहानियाँ' से साभार)

माथापच्ची हल : जुलाई, 95 अंक के

1. अक्षर 'ल'
2. रणसिंह ने बाईं ओर की ऊपर वाली पूँछ खींची थी।
3. 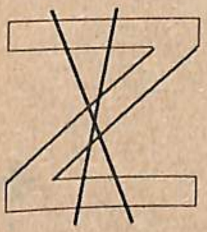
4.

त्रिपुरा	अगरतला	ककबार्क
पंजाब	चण्डीगढ़	पंजाबी
केरल	तिरुवनंतपुरम	मलयालम
पश्चिम बंगाल	कलकत्ता	बांग्ला
सिक्किम	गंगटोक	लेपचा
जम्मू-कश्मीर	श्रीनगर	डोगरी
गुजरात	अहमदाबाद	गुजराती
हिमाचल प्रदेश	शिमला	पहाड़ी
आन्ध्र प्रदेश	हैदराबाद	तेलुगु
गोवा	पणजी	कोंकणी
अंदमान-निकोबार	पोर्ट ब्लेयर	निकोबारी

5. रस्सी की लम्बाई पाँच मीटर है।
6. गीतू ने कुल रास्ते का एक-तिहाई हिस्सा सोकर बिताया।
7. प्रतिबिम्ब में 'घ' आकृति दिखेगी।

वर्ग पहेली - 47: हल

1 म	धु	2 र		3 साँ		4 जा	5 पा	न
चा		6 स	मा	चा	7 र		ल	
8 न	9 स				10 त	11 र	की	12 ब
	13 चि	त्र	14 का	र		न		धू
15 शा	न		ज		16 धा		17 ह	रा
र		18 प्रा		19 म	क	ब	रा	
20 दा	21 ल	ची	22 नी				23 रे	24 त
	ह		25 ना	26 रा	ज़	27 गी		म
28 स	रा	य		ज		29 ला	गो	स

*वर्ग पहेली - 47 का एक भी सर्वशुद्ध हल प्राप्त नहीं हुआ है। एक ग़लती वाले हल भेजने वाले पाठक हैं - मीनू मिश्रा, भोपाल; मो. मोहसीन खान, नर्मदानगर, खण्डवा; मोगली सिंह, शहडोल; मो. याकूब खान, इटारसी; ए. आर. गजेन्द्र, देवरबीजा, दुर्ग; दीपिका टेलर एवं सुनीता यादव, राजपुर (बड़वानी), खरगोन। **सभी मध्य प्रदेश।** अमृता सिन्हा, मंझौली, पटना। **बिहार।** इन्हें चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी।*

मेरी मुनिया रानी

शैतानी से बाज़ न आती
सब पर हैरानी है ढाती
दिन भर खउवा, टॉफ़ी, बिस्कुट
फेंक-फेंककर खाती
मेरी मुनिया रानी

पल में रोती, है मुसकाती
शरमाती ना है घबराती
जो भी दिखे आँख में उसकी
पाने हाथ बढ़ाती
मेरी मुनिया रानी

हरदम उधम मचाया करती
तोड़-फोड़ को भाया करती
जब देखो तब पानी-धूल में
बेसुध हो खो जाती
मेरी मुनिया रानी

डाँट-डपट का असर न होता
मर्ज़ी से उसकी क्या न छोटा
पलक झपकते दूर छिटककर
हम सबसे खोजवाती
मेरी मुनिया रानी

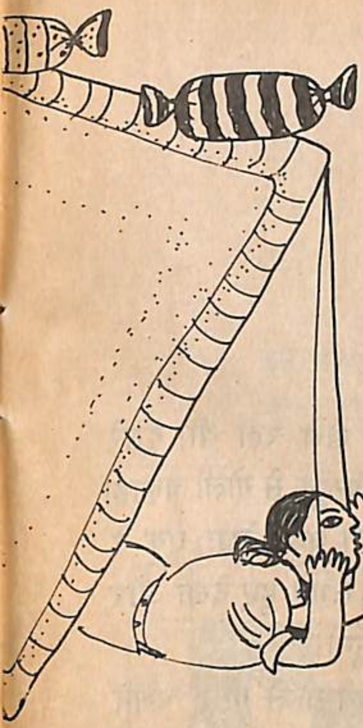

खेल खेलती काऊ-माऊ
लुक-छुप झाँक-झाँक वह झाऊ
पर बूबू, बाऊ नाम मात्र से
डरकर जो चिल्लाती
मेरी मुनिया रानी

छोटी-सी वो मुनिया रानी
पापा की मौसी, दादी, नानी
चाहे जित्ता बड़ा भी घर हो
छोटा जता लजाती
मेरी मुनिया रानी

बिन मम्मा के रह न पाती
पुप्पू ख़ातिर मचल है जाती
मम्मा की गोदी नहीं किसी को
पल भर भी सह पाती
मेरी मुनिया रानी

जब सो जाती मुनिया रानी
सारा घर लगता श्मशानी
ढेरों खुशियाँ उल्लासों का
अद्‌भुत स्रोत कहाती
मेरी मुनिया रानी

● कमलेश चन्द्राकर
चित्र ● प्रकाश पाटीदार

माथापच्ची

(1)

इस बोतल में कोई दवा भरी हुई है। बोतल का आयतन पता करना है पर इसके लिए हमें सिर्फ़ एक स्केल दिया गया है। हम न तो दवा बाहर गिरा सकते हैं, न ही उसमें पानी या कुछ और मिला सकते हैं क्योंकि इसका ढक्कन खोलना भी मना है। कैसे पता करें आयतन?

(2)

गुड्डन अगर कभी शान्त बैठ जाए तो इसे लोग दुनिया का आठवाँ आश्चर्य समझ लेते हैं। हर समय वह उछलती-फुदकती रहती है। एक बार रेलगाड़ी में सफ़र करते हुए वह एक मीटर ऊपर उचककर धड़ाम से नीचे आई। रेलगाड़ी उस वक्त 40 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ़्तार से चल रही थी। गुड्डन जहाँ से उचकी थी वहाँ से कितना आगे गिरी होगी?

(3)

गिरिजा के सात दोस्त हैं - अनु, सलमा, राजू, बबलू, डेज़ी, पंकज और हरप्रीत। अनु पास ही रहती है सो हर रोज़ मिलती है। सलमा हर दूसरे दिन मिलती है, राजू हर तीसरे दिन। और इसी तरह हरप्रीत हर सातवें दिन मिलती है। अगर यह मिलना-जुलना यूँ ही चलता रहे तो वह दिन कौन-सा होगा जब गिरिजा के सातों दोस्त एक साथ मिलने आएँगे?

(4)

तीन लड़कियाँ नदी किनारे खेल रही थीं। दूसरे किनारे पर किसी शिकारी ने बन्दूक से गोली चलाई। एक लड़की ने बन्दूक से उड़ता धुआँ देखा, एक ने गोली को पानी की सतह पर लगते हुए देखा और एक ने बन्दूक की आवाज़ सुनी।

इन तीनों में से किसे सबसे पहले गोली चलने का पता लगा होगा? उसके बाद किसे?

(5)

एक ऐसी संख्या ढूँढो जिसे अगर 3 से भाग दिया जाए तो 1 बचे, 4 से भाग दें तो 2 बचे, 5 से भाग दें तो 3 बचे और 6 से भाग दें तो 4 बचे।

(6)

एक व्यक्ति और उसकी बच्ची सड़क पर जा रहे हैं। व्यक्ति बच्ची का बाप नहीं है। फिर कौन....... ?

(7)

इन नौ सेबों को साथ में दिए चार काग़ज़ के लिफ़ाफ़ों में भरना है। पर शर्त यह है कि किसी भी लिफ़ाफ़े में भरे सेबों की संख्या विषम ही हो। कैसे होगा यह? सवाल आसान बनाने के लिए सेब खा जाने की अनुमति नहीं है।

(8)

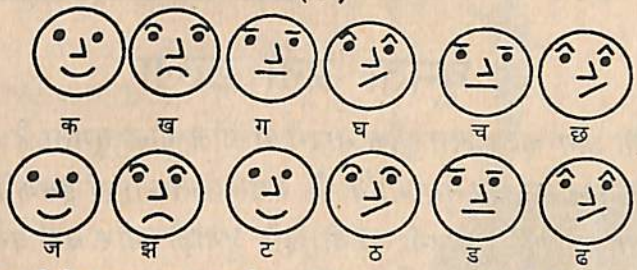

इन चेहरों में सभी के एक या एक से अधिक हमशक्ल हैं, लेकिन एक चेहरा ऐसा भी है जिसका कोई हमशक़्ल नहीं है। कौन-सा चेहरा है वह?

वर्ग पहेली-50

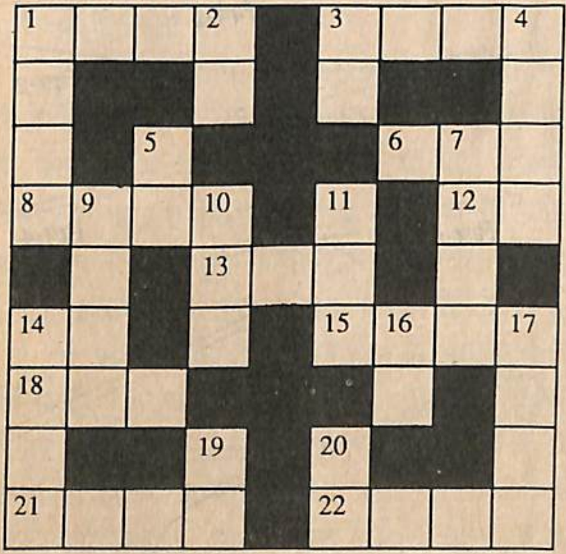

संकेत: बाएँ से दाएँ

1. घनिष्ठ (4)
3. महाशय का पयार्यवाची (4)
6. एक तरह का अलंकार (3)
8. अचरज शनी में चन्द्रमा! (4)
12. .... वे में दौड़ते हैं हवाई जहाज़ (2)
13. यातना की एक मात्रा ग़ायब कर दो, बेटी मिलेगी (3)
14. सोना भी, सम्पत्ति भी और साथ में बहुत बुजुर्ग भी (2)
15. नीर तज, एक अंगुली है (4)
18. वध (3)
21. ज्वालामुखी से लावा रिसता है तो उसका कोई नहीं होता (4)
22. 15+10+15+10+3+10 = ? (4)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. तारीक (4)
2. नारियल का गूदा (2)
3. चालीस किलो = एक . . . . . (2)
4. जो मान दे, जय-जयकार करे और धन दान भी दे (4)
5. कबीर की चादर (2)
7. जप रहे हो, पर मनाही है (4)
9. जन के बीच रब भी हो तो काम बलपूर्वक ही होता है (4)
10. एक तरह से नहीं, सौ तरह से (3)
11. जीवन (3)
14. जिसमें विष हो (4)
16. जो फसल कट चुकी है (2)
17. एक चिड़िया (4)
19. उम्मीद (2)
20. दूरी/समय = ? (2)

● निर्मल कुमार गोयल, सालिमपुर अहरा, पटना द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-50 का हल नवम्बर, 95 अंक में देखें।

एक मज़ेदार खेल

घूमता ऊनी छल्ला

अगर कोई तुमसे कहे कि ऊन का छल्ला फूँक मारने से गोल-गोल घूमता है तो तुम्हें लगेगा मज़ाक कर रहे हैं। ऐसा नहीं, यह बिल्कुल सच है। तुम भी करके देख सकते हो। हाँ इसके लिए तुम्हें ऊन के अतिरिक्त प्लास्टिक का पाइप यानी स्ट्रॉ भी जुगाड़नी पड़ेगी। इसे जुगाड़ो और बस बनाने में जुट जाओ।

स्ट्रॉ लगभग 5 मि.मी. मोटी होनी चाहिए। इससे पतली स्ट्रॉ होने पर काम नहीं चलेगा। एक सिरे से 10 से.मी. नापकर स्ट्रॉ का एक टुकड़ा **अ** काट लो। दूसरा टुकड़ा 8 से.मी. लम्बा काटो। इस 8 से.मी. वाले टुकड़े **ब** को एक सिरे से तिरछा कोण बनाते हुए काटो (चित्र-1)। **ब** टुकड़ा देखने में स्याही के पेन की उल्टी निब जैसा दिखेगा (**चित्र-2**)।

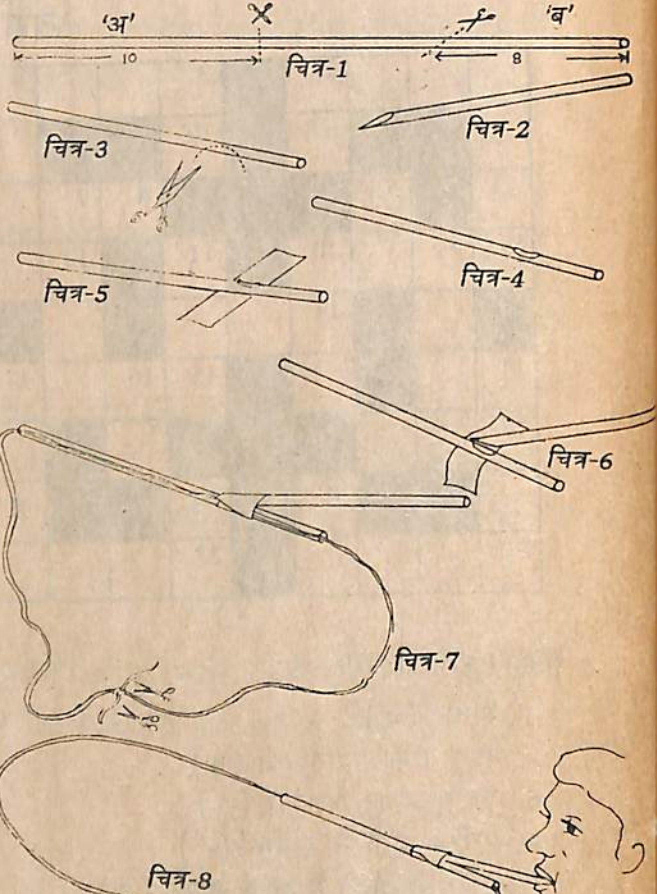

अब स्ट्रॉ **अ** को एक सिरे से करीब 3 से.मी. की दूरी पर दबाकर चपटा करो फिर गोलाई में काटो (**चित्र-3**)। अब स्ट्रॉ अ में 7-8 मि.मी. लम्बा एक अण्डाकार छेद होगा (**चित्र-4**)। इस छेद के नीचे क़रीब 2 से.मी. लम्बा सेलो टेप चिपकाओ (**चित्र-5**)। अब स्ट्रॉ **अ** के छेद को स्ट्रॉ **ब** के तिरछे सिरे से ढक दो और नीचे चिपकी सेलो टेप की पट्टी को मोड़कर दोनों स्ट्रॉ को चिपका दो (**चित्र-6**)। चिपकाते समय ध्यान रखना कि स्ट्रॉ **ब** की नोक स्ट्रॉ **अ** के छेद में न घुसे। सेलो टेप न मिले तो खुद कुछ सोचो।

अब 80-90 से.मी. लम्बा ऊन का टुकड़ा लो। इसे स्ट्रॉ **अ** में से पिरो लो। ऊन के दोनों सिरों को पकड़कर गाँठ बाँध दो। गाँठ कसकर लगाना। गाँठ ज़्यादा मोटी न हो। उसके बचे हुए सिरों को क़ैंची से काट दो। एक तरीका यह भी हो सकता है कि ऊन के दोनों सिरों को गोंद से या फ़ेवीकॉल से चिपका दो और थोड़ी देर सुखा लो (चित्र-7)।

अब स्ट्रॉ **ब** में से कसकर फूँक मारो, ऊन का छल्ला घूमना शुरू कर देगा (**चित्र-8**)।

छल्ला क्यों घूमता है? ऊन में काफी रेशे होते हैं। फूँकने से हरेक रेशे को एक धक्का मिलता है। इसी धक्के के कारण पूरा छल्ला गोल-गोल घूमता है।

● **अरविन्द गुप्ता**

(लेखक की जल्द ही प्रकाशित होने वाली किताब 'छिटपुट खिलौने' में से एक खिलौना। 33 नए प्रयोग और खिलौनों की यह किताब नेशनल बुक ट्रस्ट विभिन्न भाषाओं में छाप रहा है।)

शुतुरमुर्ग

हाँ जी, मेरा ही नाम शुतुरमुर्ग है। और मैं हूँ तो एक चिड़िया ही। हालाँकि मेरे विशाल आकार के आगे मुझे 'चिड़िया' कहना ज़रा अटपटा लगता है, है न!

तुम लोगों ने अपने आस-पास मुझे कभी नहीं देखा होगा। मैं अफ्रीका का निवासी हूँ। ऑस्ट्रेलिया में भी मैं कहीं-कहीं पाया जाता हूँ। लेकिन यह ज़रूर कहा जाता है कि आज से लगभग 15-20 हज़ार साल पहले (यानी पाषाण काल में) मैं भारत में भी हुआ करता था। ऐसा मैं नहीं कहता। पुरानी चीज़ों का अध्ययन करने वाले (पुरातत्ववेत्ता) कहते हैं। इन्हें खुदाई में पाषाण काल से ज़मीन में दबे मेरे पूर्वजों के अण्डों के छिलके और उनसे बनी चीज़ें मिली हैं।

कई जगह पाषाण काल के शैल चित्रों में मेरे भी चित्र मिले हैं। वैसे इस बारे में पुरातत्ववेत्ता दो समूहों में बँटे हुए हैं। एक समूह का कहना है कि ये मेरे पूर्वजों के चित्र हैं। दूसरा मानता है कि ये सारस के चित्र हैं। जो भी हो, मूल बात यह है कि चूँकि अब मैं भारत क्या, एशिया में भी नहीं रहता, इसलिए मैं तुम्हारा एक अजबनी दोस्त हूँ।

मैं पक्षियों की जिस प्रजाति या समूह में शामिल किया जाता हूँ, दुनिया के लगभग आधे पक्षी उसी समूह में आते हैं। इनमें मेरे जैसे बड़े आकार वालों से लेकर छोटे तक, उड़ान भरने वालों से लेकर बिना उड़ान वालों तक, ताज़े पानी में या समुद्र में रहने वालों से लेकर ज़मीन पर या पेड़ों पर रहने वालों तक...... सभी शामिल हैं। तुम्हारे आसपास के कुछ पक्षी जैसे कबूतर, तोता, मोर, तीतर, बटेर, कठफोड़वा आदि भी इसी समूह में शामिल हैं।

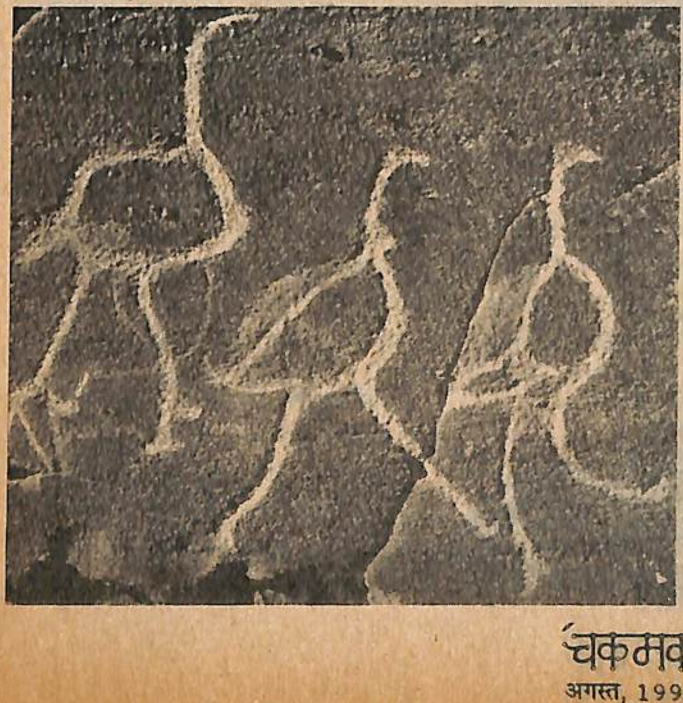

(बाएँ) सहारा में पाया गया एक शैल चित्र जो लगभग दस हजार वर्ष पुराना है। (नीचे) मध्यप्रदेश के रायसेन ज़िले के कथोटिया क्षेत्र में मिले शैल चित्रों की नक़ल।

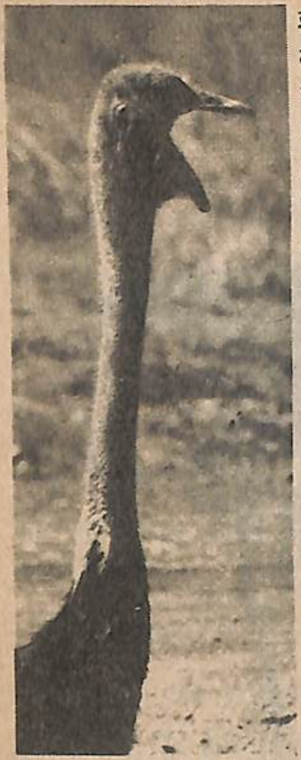

इस समूह का ही नहीं, मैं दुनिया का सबसे बड़ा और लम्बा पक्षी हूँ। हमारी औसत ऊँचाई (लम्बाई) 8 फीट के क़रीब होती है। यानी लगभग 2.5 मीटर। इस में से आधी तो मेरे गर्दन के कारण ही होती है। और इसी लम्बी गर्दन की मदद से मैं हवा के कम्पन को महसूस कर यह पता लगा लेता हूँ कि आगे-पीछे, दूर-पास कोई आ रहा है। और बस, पता चलते ही मैं फ़ौरन छिप जाता हूँ।

इस चित्र में तुम शुतुरमुर्ग के नर और मादा दोनों को देख सकते हो। क्या तुम्हें इनमें कोई अन्तर नज़र आ रहा है? हम लोगों में नर के पर अधिकतर काले होते हैं। सिर्फ़ पंख के बाहरी सिरों और पूँछ के आख़िरी बाल झक् सफ़ेद होते हैं। मादा में पर भूरे रंग के होते हैं। पंख के बाहिरी हिस्से और पूँछ के आख़िरी हिस्से वाले थोड़े हल्के भूरे और बाक़ी कुछ गाढ़े रंग के।

यहाँ हमारे जंगल के राजा पानी के किनारे बैठे धूप के मज़े ले रहे हैं। प्यास तो हमें लगी है पर फ़िलहाल हम थोड़ा दूर ही रहेंगे, ताकि अगर उनमें से कोई हम पर झपटे तो हम दौड़ में उनसे दूरी बनाए रख सकें।

यह दूरी इसलिए ज़रूरी है क्योंकि पक्षी होते हुए भी हम उड़ नहीं पाते। वैसे यह कोई बहुत चिन्ता की बात नहीं है। हम इतना तेज़ भाग लेते हैं कि विरला ही कोई शिकारी जानवर हमें पकड़ पाता है। वयस्क शुतुरमुर्ग तो 40 मील प्रति घण्टे की रफ़्तार से दौड़ लेता है।

परिवार यानी नर, मादा और कुछ बच्चे। हम शुतुरमुर्गों में आमतौर पर एक नर के साथ 2-3 वयस्क मादाएँ होती हैं। यहाँ एक जोड़ा सुहाने मौसम में नृत्य कर रहा है।

आमतौर पर मादा शुतुरमुर्ग एक बार में 6 से 8 अण्डे देती है। और अण्डों का आकार भी हमारी ही तरह बड़ा होता है। एक अण्डा बित्ते भर का। और सबसे भारी अण्डा लगभग किलो भर का होता है। एक परिवार की सारी वयस्क मादाएँ एक ही घोंसले में अण्डे देती हैं। पर अण्डों की देखभाल नर और एक ख़ास मादा मिलकर ही करते हैं।

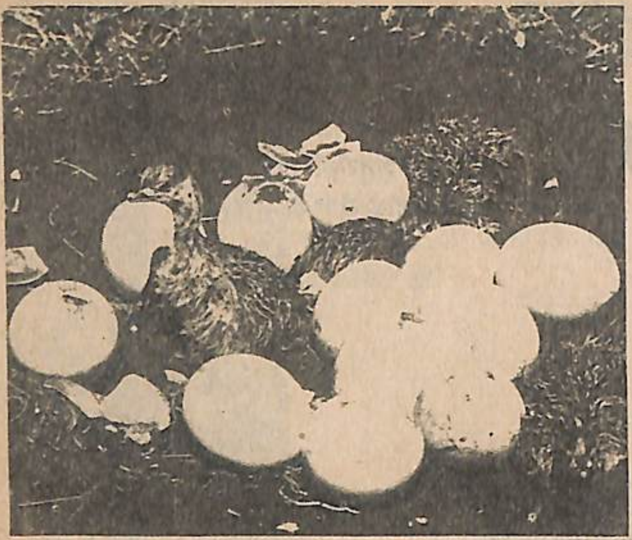

और फिर डेढ़ महीने बाद अण्डों में से चूज़े निकल आते हैं। हमारे बच्चे इतने सक्षम होते हैं कि पैदा होते ही इधर-उधर चल पड़ते हैं, फुदकने लगते हैं।

तुमने देखा या सुना होगा कि पक्षी अपने अण्डों को सेते हैं यानी उन्हें गर्म रखते हैं। परन्तु हम तो गर्म इलाक़ों में रहते हैं। इसलिए हमें अपने अण्डे और बच्चों को कड़ी धूप और तेज़ गर्मी से बचाने की ज़्यादा फ़िक्र करनी पड़ती है।

मेरे बारे में या यूँ कहें कि हमारे बारे में एक कहावत भी प्रचलित है - 'शुतुरमुर्ग की तरह सर छुपाना।' माना यह जाता है कि ख़तरे का अन्देशा होते ही शुतुरमुर्ग रेत में अपना सिर छुपा लेता है। और फिर चूँकि उसे कुछ नहीं दिखता इसलिए वह सोचता है कि वह भी किसी को दिखाई नहीं पड़ता। इसमें कुछ तो सच्चाई है और कुछ राई का पहाड़ बनाने वाली बात। बात दरअसल यह है कि जब कोई शुतुरमुर्ग अण्डे सेने बैठता या बैठती है तो उसे किसी का वहाँ आना-जाना पसन्द नहीं होता। इसलिए ज़रा-सी आहट पाते ही वे गरदन ज़मीन से सटाकर अपना सिर घास-फूस में ऐसे छुपा लेते हैं कि दूर से पहचान पाना कि वे शुतुरमुर्ग हैं, सचमुच मुश्किल होता है।

ख़ैर, अब काफ़ी देर हो गई। मैं ज़रा अपने बच्चों को सैर करा लाता हूँ। फिर मिलेंगे, कभी।

(इस लेख में आए चित्र आइविट्नेस हैण्डबुक्स, बर्ड्स ऑफ़ दी वर्ल्ड; नेशनल ज्यौग्राफ़िक, लाइफ़ नेचुरल लायब्रेरी; वाइल्डलाइफ़ एन्साइक्लोपीडिया से साभार)

धनीराम, पलिया पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/ 95

ऋचा सहगल, सातवीं, नई दिल्ली

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना